॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

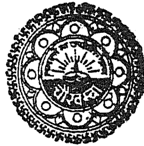
९



संस्कृत स्वयंशिक्षक प्रभा

लेखक

पण्डित श्री गौरीशङ्कर शास्त्री



चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पो० बा० नं० १०६९, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : ३२०४०४

प्रथम संस्करण १९९४

मूल्य १५-००

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

३८ यू. ए., बंगलो रोड, जवाहरनगर

पो० बा० नं० २११३

दिल्ली ११०००७

दूरभाष : २३६३९१

*

प्रधान वितरक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन

पो० बा० नं० ११२९, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : ३३३४३१

मुद्रक

फूल प्रिण्टर्स

वाराणसी

दो शब्द

सारस्वतवंशप्रदीप पण्डितप्रवर श्रीगौरीशंकर शास्त्री ने प्रस्तुत लघुकाय पुस्तिका की रचना लगभग आज से चालीस वर्ष पहले प्रारम्भिक बालकों के संस्कृत-शिक्षण की दृष्टि से अथवा अन्य विषयों के ज्ञानसम्पन्न वयस्कों के लिए जो बिना किसी की सहायता लिये संस्कृत सीखना चाहते हैं अथवा संस्कृत के माध्यम से जो अंग्रेजी सीखना चाहते हैं, उनके लिए की होगी। इसमें विषय-चयन का क्रम निःसन्देह वैज्ञानिक पद्धति से किया गया है। यह '**संस्कृत स्वयं शिक्षक प्रभा**' पुस्तिका तीन भागों में विभक्त है। इसकी रचना-शैली विद्वान् लेखक के प्रौढ़ मस्तिक की असाधारण उपज है।

प्रथम भाग—इसमें स्वर, व्यंजन, पुंल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, कारक, अव्यय, शब्दरूप, धातुरूप तथा अनुवाद करने की पद्धति का सरल क्रम से आरम्भ किया है, जिसे सामान्य बुद्धि का विद्यार्थी भी सरलता से समझ जायेगा। ये विषय १ से लेकर १० पाठों में सुसंयोजित हैं।

द्वितीय भाग—इसमें १ से २० पाठ हैं, जिनमें विविध प्रकार के अनुवादोपयोगी कृदन्तप्रत्ययों (शतृ, शानच्, तव्यत्, तव्य, अनीयर्, तुमुन्, क्त्वा, ल्यप् आदि) से बने हुए शब्दों का पर्याप्त संग्रह किया गया है।

तृतीय भाग—इसमें केवल १ से ५ पाठ है। इसमें प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले विविध प्रकार के शब्दों, संस्कृत गद्यों तथा सुभाषितों का संग्रह किया गया है। स्थान-स्थान पर अंग्रेजी शब्दों के प्रयोगों से यह पुस्तिका दोनों भाषाओं का परस्पर सम्बन्ध जोड़ने में सहायक होगी। इसके बीच में पर्याय-वाचक शब्दों के रूप में गुजराती शब्द भी दिये गये हैं, जो गुजराती बालकों के लिए उपकारक होंगे। छपाई की असावधानी से जो अशुद्धियाँ रह गयी थीं, इस संस्करण में शुद्धिपत्र देकर उस कमी को दूर कर दिया गया है।

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

विषय-सूची

प्रथमः भागः

द्वितीयः भागः

तृतीयः भागः

शुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
नारीनर	नरनारी	१	११
प्रभु	प्रभुः	२८	९
कि	किं	२८	९
देवा	देवरः	३०	३
नरः	नराः	३०	५
लतयाः	लतायाः	३१	९
मधूनी	मधूनि	३८	९
पीलू	पीलु	३८	१७
Pranoun	Pronoun	४०	२
आगच्छतु	आगच्छन्तु	४१	१२
भगवात्	भगवान्	४५	२०
राज्ञेः	राज्ञे	५१	८
शब्दा	शब्दाः	४८	२
कृत्वा	क्त्वा	४९	२
पङ्क्तु	पक्तुं	५६	६
बाल	बाल	५८	७
उष्ट्र	उष्ट्र	६४	४
कतव्य	कर्तव्यः	७१	३
आराधन	आराधनं	७४	२१
प्रातःकाबे	प्रातःकाले	७६	९
मालिनानि	मलिनानि	७७	१०
कि	किं	८३	१४
याति न	याति	८३	१४
केशाः	केशा	८४	१३
सुखाथिनः	सुखार्थिनः	८६	७
कुलीमत्व	कुलीनत्व	८७	४
भूषणो	विभूषणो	८७	१४
गुड़	गुड	८८	२

॥ श्रीः ॥

संस्कृतस्वयंशिक्षकप्रभा

SANSKRIT SWAYAM SHIKSHAK PRABHA.

प्रथमः भागः PART I.

प्रथमः पाठः LESSON I

श्रीगणेशं नमस्कृत्य साध्यसिद्धिविधायकम् ।
दीनबन्धुं कृपासिन्धुं सार्धं च शिवया शिवम् ॥ १ ॥
जेतलीजातिजातेन झङ्गपत्तनवासिना ।
विद्याभूषण-भूदेव[1]-गौरीशङ्करशास्त्रिणा ॥ २ ॥
संस्कृतस्य स्वयंशिक्षाप्रचारार्थमियं प्रभा ।
विधीयते यथाज्ञानं नारीनरहिताय वै ॥ ३ ॥

श्रीगणेश-उमेश तथा, श्रीरमेश-परमेश ।
सुरेश-दिनेश-निशेश अरु, श्रीधनेश-वरुणेश ॥ १ ॥
काय-वचन-मन से तथा, कर के इन्हें प्रणाम ।
विद्याभूषण-शास्त्री, गौरीशङ्कर नाम ॥ २ ॥
संस्कृतस्वयंशिक्षक, प्रभा-यथानिजज्ञान ।
रचता हूं लुधियाना में, कुशल करें भगवान् ॥ ३ ॥

---

1. ब्राह्मण ।

श्रीविजयादशमीदिने, वीरवार शुभ जान।
श्रीविक्रमीय बीस सौ, ग्यारह संवत् मान ॥ ४ ॥
प्रारम्भ प्रभा का किया, जगत् में हो प्रचार।
व्यावहारिक रीति से लिखा, शब्द–वाक्यभण्डार ॥ ५ ॥

अक्षर (वर्ण[1]) Letters.

संस्कृत भाषा में अक्षर (अक्खर–अच्छर–हरफ़) दो प्रकार के होते हैं, स्वर (अच्) व्यञ्जन (हल्)।

स्वर (अच्) Vowels.

अ आ (अ-आ) इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ (ओ-औ)

व्यञ्जन (हल्) Consonants.

क् ख् ग् घ् ङ् (कवर्ग)
च् छ् ज् झ् ञ् (चवर्ग)
ट् ठ् ड् ढ् ण् (टवर्ग)
त् थ् द् ध् न् (तवर्ग)
प् फ् ब् भ् म् (पवर्ग)
य् र् ल् व् श् ष् स् ह्
क्ष (क्ष्) ज्ञ ड़ त्र ॐ
अनुस्वार अं, विसर्ग अः,

बारहखड़ी–द्वादशाक्षरी।

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः।
Ka	Kā	Ki	Kī	Ku	Kū	Ke	Kai	Ko	Kau	Kaṇ	Kaḥ.

---

१. त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः ॥

पठ् (धातु Root) पढ़ना To Read.

लट् (वर्तमान काल) Present tense.

(क्रिया Verb)

	एकवचन Singular Number,	द्विवचन Dual Number,	बहुवचन Plural Number
प्रथम पुरुष III P.	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष II P.	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष I P.	पठामि	पठावः	पठामः

वाक्य Sentences.

पुंलिङ्ग Masculine gender.

सः पठति ॥	तौ पठतः ॥	ते पठन्ति ॥
वह पढ़ता है ॥	वे दो पढ़ते हैं ॥	वे सब पढ़ते हैं ॥
He reads.	They two read.	They read.
त्वं पठसि ॥	युवां पठथः ॥	यूयं पठथ ॥
तू पढ़ता है ॥	तुम दो पढ़ते हो ॥	तुम सब पढ़ते हो ॥
Thou readest.	You two read.	You read.
अहं पठामि ॥	आवां पठावः ॥	वयं पठामः ॥
मैं पढ़ता हूं ॥	हम दो पढ़ते हैं ॥	हम सब पढ़ते हैं ॥
I read.	We two read.	We read.

अनुवाद Translation पुं० M.

मैं पढ़ता हूं ॥	वह पढ़ता है ॥	तू पढ़ता है ॥
तुम सब पढ़ते हो ॥	हम सब पढ़ते हैं ॥	वे सब पढ़ते हैं ॥
हम दो पढ़ते हैं ॥	वे दो पढ़ते हैं ॥	तुम दो पढ़ते हो ॥

स्त्री लिङ्ग Feminine gender.

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
सा	ते	ताः

वाक्य Sentences.

सा पठति ॥	ते पठतः ॥	ताः पठन्ति ॥
वह पढ़ती है ॥	वे दो पढ़ती हैं ॥	वे सब पढ़ती हैं ॥
She reads.	They Two read.	Thry read.
त्वं पठसि ॥	युवां पठथः ॥	यूयं पठथ ॥
तू पढ़ती है ॥	तुम दो पढ़ती हैं ॥	तुम सब पढ़ती हो ॥
Thou readest.	You Two read.	You read.
अहं पठामि ॥	आवां पठावः ॥	वयं पठामः ॥
मैं पढ़ती हूं ॥	हम दो पढ़ती हैं ॥	हम सब पढ़ती हैं ॥

अनुवाद Translation स्त्री० F.

तू पढ़ती है ॥	हम दो पढ़ती हैं ॥	वे सब पढ़ती हैं ॥
मैं पढ़ती हूं ॥	तुम दो पढ़ती हो ॥	हम सब पढ़ती हैं ॥
वह पढ़ती है ॥	वे दो पढ़ती हैं ॥	तुम सब पढ़ती हो ॥

अव्ययं शब्दाः Indeclinables.

शब्दाः,	अर्थः	शब्दाः,	अर्थः	शब्दाः,	अर्थः,
अद्य	आज	कथम्	कैसे	हि-(एव)	ही
ह्यः	कल (बीता हुआ)	सदा	हमेशा	वा	या
श्वः	कल (आने वाला)	कदा	कब	अथवा	या
परश्वः	परसों	यदा	जब	अपि	भी
अत्र	यहां	तदा	तब	तु	तो
तत्र	वहां	अधुना	अब	शीघ्रम्	जल्दी
कुत्र	कहां	अधुनैव	अभी	शनैः	धीरे २
सर्वत्र	सब जगह	कदापि	कभी	धिक्	धिक्कारलानत
यथा	जैसे	पुनः	फिर	प्रति	ओर
तथा	वैसे	च	और	विना	विना
एवम्	ऐसे	न	नहीं	सह	साथ
				कुतः	क्यों
				नमः	नमस्कार
				स्वस्ति	कल्याण सुख

कर्ता Subject or कर्तृकारक Nominative case

अकारान्त 'देव' शब्द God. पुं० M.

(प्रथमा-विभक्तिने)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवः	देवौ	देवाः

---

१. सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ १ ॥

अर्थ—पुंलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग, तीनों लिङ्गों में, प्रथमा-द्वितोया-तृतीया-

एवम्—

(शब्दाः)	(अर्थः)			
छात्र	विद्यार्थी	छात्रः	छात्रौ	छात्राः
बाल	लड़का	बालः	बालौ	बालाः
बालक	,,	बालकः	बालकौ	बालकाः
कुमार	बालक	कुमारः	कुमारौ	कुमाराः
नर	आदमी	नरः	नरौ	नराः

संस्कृत वाक्यानि Sentences.

१ छात्राः पठन्ति
सब विद्यार्थी पढ़ते हैं

२ त्वं कथं पठसि ?
तू कैसे पढ़ता है

३ तौ अत्र पठतः
वे दो यहां पढ़ते हैं

४ अधुना अहं पठामि
अब मैं पढ़ता हूं

५ सः न पठति
वह नहीं पढ़ता है

६ देवाः पुनः पठन्ति
सब देव फिर पढ़ते हैं

७ वयं तत्र पठामः
हम सब वहां पढ़ते हैं

अनुवाद Translation.

१ मैं यहां पढ़ता हूं
२ लड़का कहां पढ़ता है
३ हम वहां पढ़ते हैं ?
४ तू फिर पढ़ता है
५ वह कैसे पढ़ता है ?
६ तुम तो नहीं पढ़ते

चतुर्थी-पञ्चमी-षष्ठी-सप्तमी-संबोधन इन विभक्तियों में तथा एकवचन-द्विवचन-बहुवचन इन वचनों में जो समान (बदलता नहीं) है, वह 'अव्यय' है ॥

द्वितीयः पाठः Lesson II.

लिख् (धातु Root) To Write, लिखना,

वर्तमान काल Present tense.

(क्रिया Verb)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
म० पु० II P.	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उ० पु० I P.	लिखामि	लिखावः	लिखामः

एवम्—

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
खाद्—खाना,	खादति	खादतः	खादन्ति
वद्—बोलना,	वदति	वदतः	वदन्ति
चल—चलना,	चलति	चलतः	चलन्ति
पच्—पकाना,	पचति	पचतः	पचन्ति

एवम्—

कर्म कारक Objective Case.

(द्वितीया विभक्ति, को)

अध्यापक, पाठक }............पढ़ाने वाला, शिक्षक, उस्ताद

शिष्य..................चेला, शिक्षा लेने वाला

ग्रन्थ....................पुस्तक, पोथी, किताब

पाठ....................संथा, सबक

सुलेख .... सुन्दरलेख, अच्छा लिखना, खुश खत
पाचक .... पकाने वाला, रसोइया

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवम्	देवौ	देवान्

वाक्य Sentences.

१ अहं सुलेखं लिखामि
मैं सुन्दर लेख लिखता हूं

२ शिष्याः किं वदन्ति ?
चेले क्या कहते हैं ?

३ वयं ग्रन्थं लिखामः ?
हम पुस्तक लिखते हैं ?

४ ते न लिखन्ति
वे नहीं लिखते हैं

५ वयं पाठं पठामः
हम पाठ पढ़ते हैं

६ रामः कुत्र चलति ?
राम कहां जाता है ?

७ अहम् अपि खादामि
मैं भी खाता हूं

८ कृष्णः किं पठति ?
कृष्ण क्या पढ़ता है ?

९ देवौ वदतः
दो देव बोलते हैं

१० यूयं कुत्र पठथ ?
तुम सब कहां पढ़ते हो ?

अनुवाद Translation

१ अब हम नहीं चलते हैं ।
२ मोहन पढ़ता है, लिखता नहीं ।
३ वह तो जल्दी बोलता है ।
४ बालक कुछ (किञ्चित्) नहीं खाता ।
५ ईश्वरदत्त क्या पढ़ता है ? ।
६ मैं सदा सुलेख लिखता हूं ।
७ तुम अभी चलते हो ।



तृतीयः पाठः Lessan III.

दृश् (धातु Root) (पश्य) देखना To See.

लट् (वर्तमान काल) Present tense.

(क्रिया Verb)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० पु० II P.	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु० I P.	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

एवम्—प्रच्छ (पृच्छ) पूछना ॥ गम् (गच्छ) जाना ॥ आगम् (आगच्छ) आना ॥ इष् (इच्छ) चाहना ॥ दाण् (यच्छ) देना ॥ पा (पिब) पीना ॥ स्था (तिष्ठ) ठहरना ॥

करण कारक Instrumental case.

(तृतीया विभक्ति, कर के–ने–से–द्वारा)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवेन	देवाभ्याम्	देवैः

एवम्—

जनक—पिता	पुत्र—बेटा, पूत
पितृव्य—चाचा	पौत्र—पोता, पुत्र का पुत्र
मातुल—मामा	प्रपौत्र—पड़पोता, पोते का लड़का

सह–साकम्–सार्धम्–समम्–(साथ, सहित) With.

वाक्य Sentences.

१ त्वं किं पश्यसि ?
तू क्या देखता है ?

२ ते तत्र तिष्ठन्ति
वे वहां ठहरते हैं

३ अहम् अधुनैव आगच्छामि
मैं अभी आता हूं

४ मोहनः किं पृच्छति ?
मोहन क्या पूछता है ?

५ वयं तत्र गच्छामः
हम वहां जाते हैं

६ यूयं किम् इच्छथ ?
तुम क्या चाहते हो ?

७ तौ कुत्र तिष्ठतः ?
वे दो कहां ठहरते हैं ?

८ श्रीरामः ग्रन्थं यच्छति
श्रीराम ग्रन्थ देता है

९ पौत्रः पुनः आगच्छति
पोता फिर आता है

१० किं पिबति कुमारः ?
कुमार क्या पीता है ?
क्या पीता है कुमार ?

अनुवाद Translation.

१ पिताजी (श्री जनक) के साथ पुत्र जाता है।

२ पोता अब क्या चाहता है ?।

३ चाचा जी (श्री पितृव्य) क्या पूछते हैं ?।

४ मामा जी वहां ठहरते हैं।

५ अब मैं वहां नहीं जाता हूं।

६ राम आता है और कृष्ण जाता है।

७ हम भलीभांति (साधुप्रकारेण) चांद (चन्द्र) को देखते हैं।



चतुर्थः पाठः Lesson IV.

धाव (धातु Root) दौड़ना To Run.

वर्तमान काल Present tense.

(क्रिया Verb)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	धावति	धावतः	धावन्ति
म० पु० II P.	धावसि	धावथः	धावथ
उ० पु० I P.	धावामि	धावावः	धावामः

एवम्—

हस्—हंसना ॥ रक्ष—रक्षा करना ॥ तॄ (तर) तैरना ॥ परिभ्रम—घूमना, सैर करना ॥

सम्प्रदान कारक Dative Case.

(चतुर्थी विभक्ति, लिये-वास्ते-को-निमित्त)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः

एवम्—

भूप-नृप—राजा

गज—हाथी

अश्व—घोड़ा

पुरोहित—पुरोहित

यजमान—जजमान

लड्डू-मोदक—लड्डू-पेड़ा

लाभ—लाभ (फायदा)

वाक्य Sentences.

१ ओं नमः शिवाय
शिव को नमस्कार

२ अहं ब्राह्मणाय ग्रन्थं यच्छामि
मैं ब्राह्मण को ग्रन्थ देता हूं

३ नृपः पुरोहिताय गजं यच्छति
राजा पुरोहित को हाथी देता है

४ लाभाय वदामः
हम लाभ के लिये कहते हैं

५ सः सदा परिभ्रमति
वह सदा सैर करता है

६ भूपः सदा रक्षति
राजा सदा रक्षा करता है

७ श्रीजनकाय नमः
श्री पिताजी को नमस्कार

८ श्रीरामाय नमः श्रीकृष्णाय च
श्रीराम और श्रीकृष्ण को नमः

९ छात्राः कुत्र परिभ्रमन्ति ?
विद्यार्थी कहां सैर करते हैं ?

१० बालाः पुनः पुनः हसन्ति
लड़के फिर २ हंसते हैं

अनुवाद Translation.

१ यजमान पुरोहित के लिये हाथी और घोड़ा देता है।

२ हम ब्राह्मणों को लड्डू और पेड़े देते हैं।

३ मैं आनन्द के लिये सदा यहां तैरता हूं।

४ वह अब छात्रों के लिये ग्रन्थ देता है।

५ तू राम के साथ अब कहां जाता है ?।

६ सूर्य और चन्द्र को नमस्कार।

७ ईश्वर सब जगह (सर्वत्र) रक्षा करता है।



पञ्चमः पाठः Lesson V.

पत् (धातु Root) गिरना To Fall.

वर्तमान काल Prasent tense.

(क्रिया Verb)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	पतति	पततः	पतन्ति
म० पु० II P.	पतसि	पतथः	पतथ
उ० पु० I P.	पतामि	पतावः	पतामः

एवम्—

वस्—रहना ॥ उद्+स्था (उत्तिष्ठ) उठना ॥ क्रीड—खेलना ॥ णम् (नम्) झुकना, नमस्कार करना ॥ प्र+णम्—प्रणम् प्रणाम करना ॥

अपादान कारक Ablative case.

(पञ्चमी विभक्ति-से (वियोग-जुदाई)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः

एवम्—

पर्वत—पहाड़

वृक्ष—पेड़

भूकम्प—भूचाल

लोक—संसार, लोग

सिंह—शेर

घोटक—(अश्व) घोड़ा

गर्दभ—गधा

आनन्द—प्रसन्नता, खुशी

वाक्य Sentences.

१ सः घोटकात् पतति
वह घोड़े से गिरता है

२ पाठकात् पाठं पठामः
हम पाठक से पाठ पढ़ते हैं

३ पर्वतात् अपि न पतसि
तू पहाड़ से भी नहीं गिरता है

४ अश्वारोहाः अश्वात् न पतन्ति
सवार घोड़े से नहीं गिरते हैं

५ अधुना अहम् उत्तिष्ठामि
अब मैं उठता हूं

६ अध्यापकात् छात्रः बिभेति
पाठक से विद्यार्थी डरता है

७ अहं ग्रामात् आगच्छामि
मैं गाँव से आता हूं

८ बालाः वृक्षात् पतन्ति।
बालक पेड़ से गिरते हैं

९ श्रीशिवाय नमः।
शिवजी को नमस्कार

१० छात्राः छात्रैः सह क्रीडन्ति
विद्यार्थी विद्यार्थियों के साथ खेलते हैं

अनुवाद Translation.

१ बन्दर (बानर) पहाड़ से भी नहीं गिरते हैं।

२ अब हम जल्दी ही उठते हैं (उत्तिष्ठामः)।

३ मैं यहां पेड़े खाता हूं।

४ वह बालकों के साथ नहीं खेलता।

५ श्रीरामचन्द्र जी को नमस्कार।

६ तू अब कहां रहता है ?।

७ योगिजन शेर से भी नहीं डरतें हैं।



षष्ठः पाठः Lessan VI.

चुर् (धातु Root) चुराना To Steel.

वर्तमान काल Present tense.

(क्रिया Verb)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु० II P.	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु० I P.	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

एवम्—

कथ—कहना = कथयति ॥ गण—गिनना = गणयति ॥
रच—रचना, पुस्तक बनाना=रचयति ॥ क्षल—धोना क्षालयति ॥
तड़—ताड़ना, पीटना=ताडयति ॥

सम्बन्ध Genitive or possessive.

(षष्ठी विभक्ति-का-की-के, रा-री-रे, ना-नी-ने)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवस्य	देवयोः	देवानाम्

एवम् —

शूर-वीर—सूरमा, बहादुर। सङ्ग्राम-रण, लड़ाई, युद्ध। खड्ग-करवाल—तलवार कृपाण। सैनिक—सिपाही, सन्तरी, फौजी आदमी। बाण—बान, तीर। जय—विजय-जीत । पराजय—हार।

वाक्य Sentences.

१ श्रीमहावीराय नमः
श्री महावीरजी को नमस्कार

२ त्वं किं चोरयसि ?
तू क्या चुराता है ?

३ सैनिकाः शीघ्रं धावन्ति
फौजी जल्दी दौड़ते हैं

४ नूतनं समाचारं कथयामि
मैं नया हाल कहता हूं

५ हस्तौ पादौ प्रक्षालयामः
हम हाथ पांव धोते हैं

६ किं गणयन्ति ते ?,
वे क्या गिनते हैं ?,

७ वेदस्य पाठं पठामः,
हम वेद का पाठ पढ़ते हैं

८ अहं विद्यालयं पश्यामि
मैं विद्यालय देखता हूं

९ अर्जुनस्य बाणाः पतन्ति
अर्जुन के बाण (तीर) गिरते हैं

१० देवानां दैत्यानां च सङ्ग्रामः
देवताओं और दैत्यों का युद्ध

अनुवाद Translation.

१ तू अब फिर क्या कहता है ?

२ मैं वहां हाथ धोता हूं

३ फौजी आदमी कहां जाते हैं ?

४ श्रीराम का घोड़ा सरपट (अतिशीघ्रम्) दौड़ता है

५ चोर (चौर) मोहन का हाथी चुराते हैं

६ सूरमा यहां तलवार देखते हैं

७ वह छात्र अध्यापकजी को प्रणाम नहीं करता है (न प्रणमति)



सप्तमः पाठः Lesson VII.

भू (भव्) धातु (Root) होना To be.

वर्तमान काल Present tense.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	भवति	भवतः	भवन्ति

अस् (धातु Root) होना To be.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	अस्ति Is	स्तः Are	सन्ति Are
म० पु० II P.	असि Art	स्थः Are	स्थ Are
उ० पु० I P.	अस्मि Am	स्वः Are	स्मः Are

अधिकरण कारक Locative case.

(सप्तमी विभक्ति–में पर)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
देवे	देवयोः	देवेषु

एवम्—

शिवालय–शिवमन्दिर	मूक–गूंगा
विद्यालय–पाठशाला	खल्वाट–गंजा
छात्रालय–बोर्डिङ्ग हौस	काण–काणा
पुस्तकालय–लाइब्रेरी	बधिर–बहरा
औषधालय–दवाखाना	खञ्ज–लंगड़ा, पङ्गु
	कुब्ज–कुबड़ा

वाक्य Sentences.

१ शिवालये शिवं पूजयति ।
वह शिवालय में शिव पूजता है।

२ वयं विद्यालये पठामः ।
हम पाठशाला में पढ़ते हैं ।

३ छात्राः छात्रालये वसन्ति ।
विद्यार्थी बोर्डिङ्ग हौसमें रहते हैं।

४ पुस्तकालये ग्रन्थान् पश्यति रामदेवः ।
पुस्तकालय में रामदेव ग्रन्थ देखता है ।

५ औषधालयः कुत्र अस्ति ?
दवाखाना कहां है ?

६ सदा धर्मस्य जयः भवति । नाऽधर्मस्य
सदा धर्म की जय होती है। अधर्म (पाप) की नहीं ।

७ किं त्वं मूकः असि ?
क्या तू गूँगा है ?

८ सः नास्ति (न+अस्ति) खञ्जः
वह नहीं है लंगड़ा ।

९ हरिद्वारे बहुवानराः सन्ति ।
हरिद्वार में बहुत बन्दर हैं ।

१० अधुना वयं तत्र न वसामः ।
अब हम वहां नहीं रहते (बसते)।

अनुवाद Translation.

१ पुस्तकालय का ग्रन्थ नहीं है ।

२ वह कृष्ण के साथ हरिद्वार जाता है ।

३ भूचाल (भूकम्प) से मैं नहीं डरता हूं (बिभेमि) ।

४ अब हम बोर्डिङ्ग हौस में ही रहते हैं ।

५ गूँगा आदमी कहां है ?

६ गंजा पुरुष गरीब (:निर्धन) नहीं होता है ।

७ छात्र विद्यालय में गाते हैं (गायन्ति) ।



अष्टमः पाठः Lesson VIII.

कृ (धातु Root) करना To Do.

वर्तमान काल Present tense.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु० II P.	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु० I P.	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

श्रु (धातु Root सुनना To Hear.

वर्तमान काल Present tense.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु० II P.	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० पु० I P.	शृणोमि	शृणुवः शृण्वः	शृणुमः शृण्मः

सम्बोधन Vocative.

(प्रथमा विभक्ति हे, भोः, अयि, रे, अरे, ओ)

ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
हे देव !	हे देवौ !	हे देवाः !

एवम् — महाराज=बड़ा राजा । नाथ=मालिक । महाशय=सज्जन, भलापुरुष । समुद्र=समुन्दर । जलाशय=तडाग, तालाब । कूप=कुआँ । सेवक=दास, नौकर । नद=बड़ा दरिया ।

वाक्य Sentences.

१ श्रीमहावीरस्य प्रसादं खादामः
हम श्री हनुमान्जी का प्रसाद खाते हैं।

२ मूर्खाः जनाः किं कथयन्ति ?
मूर्ख आदमी क्या कहते हैं ?

३ हे राम ! कुत्र गच्छसि ?
हे राम ! तू कहां जाता है ?

४ भोः बालाः ! तत्र किं कुरुथ ?
अरे लड़को ! वहां तुम क्या करते हो ?

५ उपदेशं शृणोमि भोः !
अरे (ओ) मैं उपदेश सुनता हूं।

६ महाशय ! समुद्रं गच्छामि।
हे महाशय ! मैं समुन्दर को जाता हूं।

७ अयि छात्राः ! किं पठथ ?
विद्यार्थियो ! तुम क्या पढ़ते हो ?

८ बालकाः बालैः सह क्रीडन्ति।
लड़के लड़कों के साथ खेलते हैं।

९ सेवक ! तत्र किं करोषि ?
रे सेवक ! वहां तू क्या करता है ?

१० रे मूर्ख ! किं वदसि ?
अरे मूर्ख ! तू क्या कहता है ?

अनुवाद Translation.

१ महाशय ! अब कहां रहते हो ?
२ हे महाराज ! पण्डित लोग अभी आते हैं।
३ अरे लड़को ! तुम क्या करते हो ?
४ मूर्ख लोग भला उपदेश (हितोपदेश) नहीं सुनते हैं।
५ हे नाथ ! अब मैं विद्यालय में पढ़ता हूं।
६ अरे सेवक ! तू कुछ (किञ्चित्) सुनता है वा नहीं ?
७ दास सदा यहां आता जाता है।

नवमः पाठः Lesson IX.

पठ् (धातु Root) पढ़ना To Read.

लङ् (भूत काल) Past tense.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	अपठत्[1]	अपठताम्	अपठन्
म० पु० II P.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु० I P.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

एवम्—लिख्–लिखना, अलिखत्। खाद्–खाना, अखादत्। वद्–बोलना, अवदत्। चल्–चलना, अचलत्। पच्–पकाना, अपचत्। दृश्–देखना, अपश्यत्। प्रच्छ–पूछना, अपृच्छत्। गम्–जाना, अगच्छत्। आगम्–आना, आगच्छत्। इष्–चाहना, ऐच्छत्। दाण्–देना, अयच्छत्। पा-पीना, अपिबत्। स्था–ठहरना, अतिष्ठत्। धाव्–दौड़ना, अधावत्। हस्–हंसना, अहसत्। रक्ष्–रक्षाकरना, अरक्षत्। तृ–तैरना, अतरत्। परिभ्रम्–सैरकरना, पर्यभ्रमत्। पत्–गिरना, अपतत्। वस्–रहना, अवसत्। उद्+स्था–उठना, उदतिष्ठत्। क्रीड्–खेलना, अक्रीडत्। णम् (नम्)-झुकना, अनमत्। चुर्–चुराना, अचोरयत्। कथ कहना, अकथयत्। क्षल–धोना, अक्षालयत्। गण–गिनना, अगणयत्। भू–होना, अभवत्। अस्–होना—

प्र० पु० III P.	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु० II P.	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० पु० I P.	आसम्	आस्व	आस्म

---

१. पठति स्म, पठतः स्म, पठन्ति स्म इत्यादि। वर्तमानकालिक धातुओं के पीछे 'स्म' लगाने से भूतकालिक बन जाते हैं।

वाक्य Sentences.

पुंलिङ्ग Masculine gender.

सः अपठत् ।	तौ अपठताम् ।	ते अपठन्
वह पढ़ा ।	वे दो पढ़ें ।	वे सब पढ़े ।
He read	They two read.	They read.
त्वम् अपठः ।	युवाम् अपठतम् ।	यूयम् अपठत् ।
तू पढ़ा ।	तुम दो पढ़े ।	तुम सब पढ़े ।
Thau readest.	you two read.	you read.
अहम् अपठम् ।	आवाम् अपठाव ।	वयम् अपठाम ।
मैं पढ़ा ।	हम दो पढ़े ।	हम सब पढ़े ।
I read.	We two read.	We read.

१ त्वं पुनः कुत्र अपठः ?
तू फिर कहां पढ़ा ?

२ वयम् अत्र न अपठाम
हम यहां नहीं पढ़े

३ अहं पुनः तत्र न अपठम्
मैं फिर वहां नहीं पढ़ा

४ मोहनस्य विवाहः अभवत्
मोहन की शादी हो गई

५ महाराजस्य घोटकः आगच्छत्
महाराज का घोड़ा आया ।

६ सः ग्रामम् अगच्छत् ।
वह गांव को चला गया ।

७ रामः रावणं हन्तिस्म ।
राम ने रावण को मारा ।

८ नाथः किं करोतिस्म ?
नाथ ने क्या किया ?

९ अहम् उपदेशं न शृणोमिस्म ।
मैं ने उपदेश नहीं सुना ।

१० बालः वृक्षात् अपतत् ।
लड़का पेड़ से गिरा ।

अनुवाद Translation.

१ मैं हरिद्वार को चला गया था । ५ तू अब कहां गया था ?
२ महाराज की फिर जीत हुई । ६ मोहन ! बन्दर फिर आगये ।
३ छात्रों ने स्वर से वेदमन्त्र पढ़े । ७ श्रीराम दशरथ का बेटा था (आसीत्) ।
४ हम विद्यालय में नहीं पढ़े ।



दशमः पाठः Lesson X.

पठ् (धातु Root पढ़ना To read.

लृट् (भविष्यत् काल Future tense.

प्र० पु० III P.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु० II P.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु० I P.	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

एवम्—लिख—लिखना, लेखिष्यति। खाद्—खाना, खादिष्यति। वद्—बोलना, वदिष्यति। चल्—चलना, चलिष्यति। पच्—पकाना, पक्ष्यति। दृश—देखना, द्रक्ष्यति। प्रच्छ्—पूछना, प्रक्ष्यति। गम्—जाना, गमिष्यति। आ+गम्—आना, आगमिष्यति। इष्—चाहना, एषिष्यति। दाण्—देना, दास्यति। पा—पीना, पास्यति। स्था—ठहरना, स्थास्यति। धाव् दौड़ना, धाविष्यति। हस्—हंसना, हसिष्यति। परिभ्रम्—घूमना, सैर करना, परिभ्रमिष्यति। पत्—गिरना, पतिष्यति। वस्—रहना, वत्स्यति। उद् + स्था—उठना, उत्थास्यति। क्रीड्—खेलना, क्रीडिष्यति। णम् (नम्)—झुकना, नंस्यति। चुर—चुराना, चोरयिष्यति। कथ—कहना, कथयिष्यति। क्षल—धोना, क्षालयिष्यति। गण—गिनना, गणिष्यति। भू—होना, भविष्यति। अस्—होना, भविष्यति। कृ—करना, करिष्यति। श्रु—सुनना, श्रोष्यति।

वाक्य Sentences.

पुंलिङ्ग Masculine gender.

सः पठिष्यति।	तौ पठिष्यतः।	ते पठिष्यन्ति।
वह पढ़ेगा।	वे दो पढ़ेंगे।	वे सब पढ़ेंगे।
He will read.	They two will read.	They will read.

त्वं पठिष्यसि ।	**युवां पठिष्यथः ।**	**यूयं पठिष्यथ ।**
तू पढ़ेगा ।	तुम दो पढ़ोगे ।	तुम सब पढ़ोगे ।
Thou will read.	You two will read.	You will read.
अहं पठिष्यामि ।	**आवां पठिष्यावः ।**	**वयं पठिष्यामः ।**
मैं पढ़ूंगा ।	हम दो पढ़ेंगे ।	हम सब पढ़ेंगे ।
I shall read.	We two shall read.	We shall read.

१ **अद्य छात्राः सुलेखं लेखिष्यन्ति**
आज छात्र सुलेख लिखेंगे ।

२ **श्वः गमिष्यामि ग्रामम् ।**
मैं कल गांव को जाऊंगा ।

३ **परश्वः आगमिष्यति सेवकः**
नौकर परसों आएगा ।

४ **अधुना किं करिष्यसि त्वम् ?**
अब तू क्या करेगा ?

५ **धर्मस्य हि भविष्यति जयः ।**
धर्म की ही जीत होगी ?

६ **स्वदेशे हि वत्स्यामि ।**
मैं अपने देश ही में रहूंगा ।

७ **विदेशे न गमिष्यामः ।**
परदेश को नहीं जायँगे ।

८ **उपदेशे महालाभः भविष्यति ।**
उपदेश में बड़ा लाभ होगा ।

९ **बालाः बालबोधं पठिष्यन्ति ।**
बालक बालबोध पढ़ेंगे ।

१० **पाठकः ग्रन्थं रचयिष्यति ।**
पाठक ग्रन्थ रचेगा ।

अनुवाद Translation.

१ हम पाठकजी से अब पाठ पढ़ेंगे ।

२ तू फिर यहां कब आएगा ?

३ मैं कल ग्राम को चलाजाऊंगा ।

४ बाल के वाल (केस) (वालाः, केशाः) अब नहीं गिरेंगे ।

५ रसोइया (पाचक) आज नहीं पकाएगा (पक्ष्यति) ।

६ ऐतवार (आदित्यवारे) विद्यालय देखूंगा (द्रक्ष्यामि) ।

७ महाराज क्या पूछेगा ? (प्रक्ष्यति) ।

इति प्रथमः भागः समाप्तः ।



द्वितीयः भागः PART II.

प्रथमः पाठः Lesson I.

इकारान्त 'मुनि' शब्द, Sage पुंलिङ्ग M.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वि०	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृ०	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
च०	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पं०	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
ष०	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
स०	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सं०	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

एवम्—

हरि—ईश्वर	भूपति—राजा	अग्नि—आग
रवि—सूरज	अरि—शत्रु	गिरि—पहाड़
ऋषि—ऋषि	कपि—बन्दर	असि—तलवार
कवि—शायर	दुन्दुभि—नगारा	निधि—खज़ाना

ज्ञा (धातु Root) जानना To Know.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० पु० II P.	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० पु० I P.	जानामि	जानीवः	जानीमः

वाक्य Sentences. पुं० M.

१ हरिः सर्वत्र वसति ।
ईश्वर सब ठौर (जगह) रहता है ।

२ मुनयः कुत्र गच्छन्ति ?
मुनि कहां जाते हैं ?

३ वयं कविं जानीमः ।
हम शायर को जानते हैं ।

४ भूपतेः निधिः अत्र अस्ति ।
राजा का खज़ाना यहां है ।

५ गिरेः कपयः पतन्ति ।
पहाड़ से बन्दर गिरते हैं ।

६ दुन्दुभिः तत्र नास्ति (न+अस्ति) ।
नगारा वहां नहीं है ।

७ हरये नमः ।
ईश्वर को नमस्कार ।

८ अहम् अधुना ऋषेः पृच्छामि ।
मैं अब ऋषि से पूछता हूं ।

९ गिरौ न वसामः ।
हम पहाड़ में नहीं बसते ।

१० श्रीमुने ! भूपतिः प्रणमति ।
मुनि जी ! पृथिवीपति (राजा) प्रणाम करता है ।

अनुवाद Translation.

१ अतिथि (पाहुना, मेहमान,) क्या कहता है ?

२ चन्द्रमणि का खजाना (निधि) है ।

३ हे कवि ! अब तू क्या चाहता है ?

४ मुनि पहाड़ों में भी (गिरिषु अपि) बसते हैं ।

५ यहां बन्दर (कपयः) आते जाते हैं ।

६ हरि सब ठौर रक्षा करता है (रक्षति) ।

७ मैं सूरजको (रविम्) देखता हूँ ।



द्वितीयः पाठः Lesson II.

उकारान्त 'साधु' शब्द, भलापुरुष, सन्त, Good man पुंलिङ्ग M.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	साधुम्	साधू	साधून्
तृ०	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पं०	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
ष०	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
स०	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सं०	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः !

एवम्—

विष्णु—नारायण, परमेश्वर। गुरु—मन्त्र के उपदेश देने वाला, उस्ताद। बन्धु—सम्बन्धी।

शम्भु—शिव, महादेव। प्रभु—स्वामी, मालिक। शिशु—बालक, बच्चा।

भानु—सूरज। सिन्धु—समुन्दर। शत्रु—(रिपु) बैरी।

विधु—चन्द्रमा। जन्तु—जीव, प्राणी। पशु—चौपाया।

डुक्रीञ् (क्री) (धातु Root) मोल लेना, खरीदना To Buy.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० पु० II P.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० पु० I P.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

वि + क्री—बेचना To sell.

विक्रीणाति। विक्रीणीतः। विक्रीणन्ति।

वाक्य Sentences.

१ श्रीगुरवे नमो नमः ।
गुरुजी को नमस्कार २

२ साधो ! किं पृच्छसि ?
हे साधु ! तू क्या पूछता है ?

३ सिन्धौ अपि वसन्ति जन्तवः ।
समुन्दर में भी जीव रहते हैं ।

४ प्रभु पशून् क्रीणाति ।
मालिक चौपायों को मोल लेता है ।

५ शिशुभिः सह क्रीडन्ति शिशवः ।
बच्चे बच्चों के साथ खेलते हैं ।

६ श्रीविष्णवे प्रभवे नमः ।
श्रीविष्णु प्रभु को नमस्कार ।

७ राहुः केतुः च भानोः विधोः शत्रू स्तः ।
राहु और केतु सूरज चान्द के शत्रु हैं ।

८ पशवः किं खादन्ति तत्र ?
चौपाये वहां क्या खाते हैं ?

९ शत्रूणां शिशवः कुत्र वसन्ति ?
शत्रुओं के बच्चे कहां बसते हैं ?

१० श्रीगुरो ! प्रणमामि ।
गुरुजी ! मैं प्रणाम करता हूं ।

अनुवाद Translation.

१ श्रीमहादेव को (श्रीशम्भवे) नमस्कार २ (नमोनमः)
२ अब मालिक (प्रभुः) क्या कहता है ?
३ प्रभु विष्णु जीवों की रक्षा करता है । (जन्तून् रक्षति)
४ दयालु (कृपालु) गुरु जी कहां जाते हैं ?
५ मैं समुन्दर के (सिन्धोः) जीव (जन्तून्) देखता हूं ।
६ शत्रु चौपाये (पशून्) नहीं बेचता है (विक्रीणाति) ।
७ बच्चे (शिशवः) वहां क्या करते हैं ?



तृतीयः पाठः Lesson III.

ऋकारान्त 'पितृ' शब्द, पिता Father पुंलिङ्ग

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

एवम्—भ्रातृ—भाई। जामातृ—जमाई, दामाद।

देवृ—देवर, देर। नृ—आदमी।

ऋकारान्त 'कर्तृ' शब्द करनेवाला।

प्र० कर्ता–कर्तारौ–कर्तारः। द्वि० कर्तारम्–कर्तारौ–कर्तॄन्। शेषं पितृवत्।

एवम्—धर्तृ–धारण करने वाला। भर्तृ–पालना करने वाला, पति। हर्तृ–हरने वाला, चुरानेवाला, नाश करनेवाला।

ग्रह (धातु Root) लेना, पकड़ना, To catch.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु० II P.	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु० I P.	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

वाक्य Sentences.

१ भ्रात्रा सह क्रीडामि ।
मैं भाई के साथ खेलता हूं ।

२ नराः किम् इच्छन्ति ?
आदमी क्या चाहते हैं ?

३ सदा प्रातः श्रीपितरं नमामः ।
हम सदा प्रातःकाल पिताजी को नमस्कार करते हैं ।

४ जामाता सायम् आगच्छति ।
जँवाई सायङ्काल आता है ।

५ पिता सदा रक्षति ।
पिता सदा रक्षा करता है ।

६ देवा भ्रातरं पृच्छति ।
देवर भाई को पूछता है ।

७ भ्राता किं कथयति ?
भाई क्या कहता है ?

८ पितुः भ्राता तत्र अस्ति ।
पिता का भाई वहाँ है ।

९ दातारः पुनः आगच्छन्ति ।
दाता फिर आते हैं

१० भर्तारं प्रणमामि ।
मैं भर्ता (पति) को प्रणाम करती हूं ।

अनुवाद Translation

१ पिताजी को नमस्कार (श्रीपित्रे नमः) ।
२ भाई लिखता है, मैं पढ़ता हूं ।
३ दामाद अब क्या चाहता है ?
४ अब मैं पिताजी के साथ (श्रीपित्रा सह) जाता हूं ।
५ हे भाई ! तू क्या पूछता है ?
६ करनेवाले आदमी (कर्तारः नरः) कहाँ हैं ?
७ पिताओं (पितरों) को नमस्कार ।



---

१. जनिता चोपनीता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति ।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥

चतुर्थः पाठः Lesson IV.

आकारान्त 'लता' शब्द बेल, वल्ली Creeper स्त्रीलिङ्ग F.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	लता	लते	लताः
द्वि०	लताम्	लते	लताः
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं०	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष०	लतयाः	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सं०	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

एवम्—

रमा—लक्ष्मी । अध्यापिका, पाठिका—पढ़नेवाली । पुत्रिका—बेटी, लड़की ।
उमा—पार्वती । पत्रिका—चिट्ठी, पत्री ।
शाला—जगह । कथा—कहानी । निशा—रात ।
बाला—लड़की । रथ्या—गली । अश्वा—घोड़ी ।
माला—माला, हार । वाटिका—बागीची । मञ्जूषा—संदूक ।

पूञ् (पू) (धातु Root) पवित्र करना To clean.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	पुनाति	पुनीतः	पुनन्ति
म० पु० II P.	पुनासि	पुनीथः	पुनीथ
उ० पु० I P.	पुनामि	पुनीवः	पुनीमः

वाक्य Sentences.

१ रमायै उमायै दुर्गायै च नमः।
लक्ष्मी पार्वती और दुर्गा को नमः।

२ पाठशालायां गायन्ति बालिकाः।
लड़कियाँ पाठशाला में गाती हैं।

३ अम्बया सह शनैः शनैः गच्छामि।
मैं मां के साथ धीरे धीरे जाती हूँ।

४ मञ्जूषायां (पेटिकायां) मुद्रिका नास्ति।
संदूक (पिटारी पेटी) में मुंदरी नहीं है।

५ पुत्रिकां प्रति पत्रिकां लिखामि।
पुत्री की ओर चिट्ठी लिखती हूँ।

६ श्रीगङ्गा पुनाति।
गङ्गा जी पवित्र करती है।

७ बालायाः माला नास्ति।
लड़की की माला नहीं है।

८ कमला पाकशालायां न पचति।
कमला रसोईघर में नहीं पकाती है।

९ सरलायाः पत्रिका अस्ति।
सरला की चिट्ठी है।

१० विमला पाठशालां गच्छति।
विमला स्कूल को जाती है।

अनुवाद Translation

१ गङ्गा और यमुना कहां मिलती हैं ? (मिलतः)।

२ अपनी २ गलियों में लड़कियाँ रात को खेलती हैं।

३ दिवाली में लक्ष्मी की पूजा होती है।
(दीपमालायां रमायाः पूजा भवति)।

४ (शकुन्तला पुत्रिकां प्रति समाचारपत्रिकां प्रेषयति।)
शकुन्तला लड़की की ओर अख़बार भेजती है।

५ चन्द्रकान्ता की अंगूठी (मुद्रिका) कहां है ?

६ कृष्णा की स्लेट (पाषाणपट्टिका) नहीं है।

७ बाटिका में घोड़ी (अश्वा) खेलती है।

पञ्चमः पाठः Lesson V.

ईकारान्त 'नदी' शब्द, दरिया River स्त्रीलिङ्ग F.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

एवम्—

(शब्दाः)	(अर्थः)	(शब्दाः)	(अर्थः)	(शब्दाः)	(अर्थः)
जननी	माता	राज्ञी	रानी	नारी	स्त्री, औरत
पुत्री	बेटी	सखी	सहेली	कुमारी	कुआँरी कन्या
भगिनी	बहिन, भैण	नटी	नटनी	नगरी	शहर
पत्नी	अपनी स्त्री	दासी	सेवा करने वाली नौकरानी	वापी	बावली (ड़ी)

मुच्लृ (मुञ्च) (धातु Root) छोड़ना

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
म० पु० II P.	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उ० पु० I P.	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः

वाक्य Sentences.

१ श्रीजनन्यै नमः ।
मां जी को नमस्कार ।

२ दास्यः अत्र आगच्छन्ति ।
दासियाँ यहां आती हैं ।

३ नदीं गच्छन्ति नार्यः ।
स्त्रियाँ नदी को जाती हैं ।

४ नगर्यां राज्ञ्याः वापी अस्ति ।
नगरी में रानी की बावली है।

५ राजकुमारी, पत्रीं लिखति ।
राजकुमारी चिट्ठी लिखती है ।

६ नगरीं न मुञ्चामि ।
मैं नगरी को नहीं छोड़ती ।

७ पत्रीं पठति पुत्री ।
लड़की चिट्ठी पढ़ती है ।

८ जननि ! कुत्र असि ?
हे मां ! तू कहां है ?

९ देवी सदा रक्षति ।
देवी सदा रक्षा करती है ।

१० नटी कुत्र गायति ?
नटी कहां गाती है ?

अनुवाद Translation.

१ लेखनी से पुत्री की ओर पत्री (चिट्ठी) लिखती हूं ।
२ अब औरतें दरिया को नहीं जाती हैं ।
३ माता अपने शहर (पुरी) में रहती है ।
४ बहिन सहेलियों के साथ (सखीभिः सार्धम्) खेलती है,
५ श्रीलक्ष्मी तथा श्रीपार्वती को नमस्कार ।
६ श्रीमती विद्यावती स्याही (मसी) चाहती है ।
७ कलावती अब क्या कहती है ?



षष्ठः पाठः Lesson VI.

ऋकारान्त 'मातृ' शब्द माता, माँ, Mother स्त्रीलिङ्ग F.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० Pl.
प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातरौ	मातृः

(शेषं पितृवत्)

'स्वसृ' शब्द बहिन भैण Sister स्त्री F.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः

(शेषं पितृवत्)

वाक्य Sentences.

१ श्री मात्रे नमः । मां जी को नमस्कार ।

२ माता किं पृच्छति ? । मां क्या पूछती है ? ।

३ मातः ! प्रणमामि । माता ! मैं प्रणाम करता हूं ।

४ मातुः स्वसा आगच्छति ! मासी आती है ।

५ मातरं कथयामि ।.........मां को कहती हूं ।

अनुवाद Translation.

१ बेटी (दुहिता) अब पढ़ती नहीं ।

२ सब माताओं को नमो नमः । (मातृभ्यः नमो नमः) ।

३ बहिनें (स्वसारः) अब क्या चाहती हैं ? ।

४ मासी (मातुः स्वसा) क्या कहती है ? ।

---

1. राजपत्नी गुरोः पत्नी मित्रपत्नी तथैव च । पत्नीमाता स्वमाता च पञ्चैता मातरः स्मृताः॥

सप्तमः पाठः Lesson VII.

अकारान्त 'फल' शब्द मेवा Fruit परिणाम (नतीजा), नपुंसक लिङ्ग Neuter gender.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम्	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पं०	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	फलयोः	फलेषु
सं०	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

एवम्—

(शब्दाः) (अर्थः)	(शब्दाः) (अर्थः)	(शब्दाः) (अर्थः)
जल (पानीय)—पानी	पत्र—पत्ता, चिट्ठी	दुग्ध—दूध
बल—शक्ति, ज़ोर	छत्र—छाता, छतरी	घृत—घी
छल—छलना, धोखा	मित्र—मित्र	नवनीत—मक्खन
तल—नीचे का भाग	धन—रुपया पैसा	तक्र—छाछ
हल—हल	बन—जंगल	भोजन—भोजन

षिच (षिञ्च) (धातु Root) सींचना।

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
म० पु० II P.	सिञ्चसि	सिञ्चथः	सिञ्चथ
उ० पु० I P.	सिञ्चामि	सिञ्चावः	सिञ्चामः

वाक्य Sentences.

१ शीतलं जलं कुत्राऽस्ति ?
ठंडा पानी कहां है ?

२ दुग्धं पिबामि, न तक्रम् ।
मैं दूध पीता हूं छाछ नहीं ।

३ धनेन हि मानं भवति ।
धन से ही मान होता है ।

४ लवपुरं न गच्छति मित्रम् ।
मित्र लाहौर नहीं जाता है ।

५ धनं विना सुखं नास्ति ।
धन के विना सुख नहीं है ।

६ मित्रस्य छत्रम् अत्रास्ति ।
मित्र की छतरी यहां है ।

७ फलानि तत्र न सन्ति ।
फल वहां नहीं हैं ।

८ सत्यं कथयामि नाऽसत्यम् ।
मैं सच कहता हूं, झूठ नहीं ।

९ ज्ञानेन हि सुखं मिलति ।
ज्ञान से ही सुख मिलता है ।

१० मित्रं प्रति पत्रं प्रेषयामि ।
मित्र की ओर पत्र भेजता हूं ।

अनुवाद Translation.

१ मित्र मित्र की ओर पत्र (चिट्ठी) लिखता है ।

२ मित्र के साथ जंगल (वन) को जाता हूं ।

३ मित्र ! पुण्य से सुख होता है, पाप से दुःख ।

४ मित्र का छाता यहां नहीं है ।

५ मित्र अब घर में (गृहे) नहीं है ।

६ मित्र की पोथियाँ (पुस्तकानि) कहां हैं ?

७ सब मित्र पानी (पानीयम्) पीते हैं ।



अष्टमः पाठः Lesson VIII.

इकारान्त 'वारि' शब्द पानी Water. न० लिं० N.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः

उकारान्त 'मधु' शब्द, शहद-माखी, Honey.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनी
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः

एवम्—

(वारिवत्)

(शब्दाः) (अर्थः)

दधि[1]—दही ।

अक्षि—आंख ।

अस्थि—हड्डी ।

(मधुवत्)

(शब्दाः) (अर्थः)

वसु—धन—रुपया पैसा ।

अम्बु—जल, पानी ।

वस्तु—पदार्थ, चीज़, वस्त ।

पीलू—पीलूँ फल ।

दारु—काठ, लकड़ी ।

कृती (कृन्त) (धातु Root) काटना, To Cut.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	कृन्तति	कृन्ततः	कृन्तन्ति
म० पु० II P.	कृन्तसि	कृन्तथः	कृन्तथ
उ० पु० I P.	कृन्तामि	कृन्तावः	कृन्तामः

---

१. तृ० दध्ना-दधिभ्याम्-दधिभिः । च० दध्ने-दधिभ्याम्-दधिभ्यः ।

तृ० अक्ष्णा-अक्षिभ्याम्-अक्षिभिः । च० अक्ष्णे-अक्षिभ्याम्-अक्षिभ्यः

तृ० अस्थ्ना-अस्थिभ्याम्-अस्थिभिः । च० अस्थ्ने-अस्थिभ्याम्-अस्थिभ्यः ।

वाक्य Sentences.

१ वारि चलति, न वा ।
पानी चलता है, या नहीं ।

२ वारि कुत्र वहति ?
पानी कहां बहता है ?

३ अत्र वारि पिबामि, ।
मैं यहां पानी पीता हूँ ।

४ वारिणि अस्थीनि पतन्ति ।
पानी में हड्डियाँ गिरती हैं ।

५ तत्र नास्ति (न+अस्ति) दधि
दही वहां नहीं है ।

६ अक्षिभ्यां पश्यति ।
आंखों से देखता है ।

७ दध्ना सह खादामि ।
दही के साथ खाता हूँ ।

८ दारूणि न कृन्तामः ।
हम लकड़ियाँ नहीं काटते हैं ।

९ पीलूनि कुत्र सन्ति ?
पीलूँ कहां हैं ?

१० कुत्र मिलति मधु ?
शहद (माखी) कहां मिलती है ?

अनुवाद Translation

१ पानी के साथ लकड़ी चलती है, (वारिणा सह दारु चलति)

२ अब पानी नहीं चलता है ।

३ आखों से पानी बहता है (अक्षिभ्यः वारि (अम्बु) वहति)

४ दही कहाँ मिलता है ? (मिलति ?)

५ यहां पीलूँ नहीं हैं (पीलूनि न सन्ति)

६ वहां बहुत धन है (तत्र बहु वसु अस्ति)

७ सब चीज़ वस्त मिलती हैं (वस्तूनि मिलन्ति)



नवमः पाठः Lesson IX.

अकारान्त 'सर्व' शब्द (सर्वनाम Pranoun)

ब० पुं० All. M.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सं०	हे सर्व !	हे सर्वौ !	हे सर्वे !

पठ् (धातु Root) लोट् Imperative mood.

(आज्ञा-प्रार्थना-आशीर्वाद इत्यादि अर्थों में लोट् लगाया जाता है)

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	पठतु—पठतात्	पठताम्	पठन्तु
म० पु० II P.	पठ—पठतात्	पठतम्	पठत
उ० पु० I P.	पठानि	पठाव	पठाम

डुकृञ् (कृ) (धातु Root) करना To do,

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र० पु० III P.	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु० II P.	कुरु—कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु० I P.	करवाणि	करवाव	करवाम

सः करोतु, तौ कुरुताम्, ते कुर्वन्तु,
त्वं कुरु, युवां कुरुतम्, यूयं कुरुत,
अहं करवाणि, आवां करवाव, वयं करवाम,

एवम्—लिखतु । खादतु । वदतु । चलतु । पचतु । पश्यतु । पृच्छतु । गच्छतु । आगच्छतु । इच्छतु । यच्छतु । पिबतु । तिष्ठतु । धावतु । हसतु । रक्षतु । तरतु । परिभ्रमतु । पततु । वसतु । उत्तिष्ठतु । क्रीडतु । नमतु । चोरयतु । कथयतु । क्षालयतु । गणयतु । भवतु । अस्तु । शृणोतु । जानातु । क्रीणातु । विक्रीणातु । गृह्णातु । पुनातु । मुञ्चतु । सिञ्चतु । कृन्ततु ।

वाक्य Sentences.

१ अधुना सः गायतु ।
अब वह गाए ।

२ त्वं ग्रन्थं पठ ।
तू ग्रन्थ पढ़ ।

३ अहं किं करवाणि ?
मैं क्या करूं ?

४ सर्वे पठन्तु ।
सब पढ़ें ।

५ शीघ्रं कुरु ।
तू जल्दी कर ।

६ अत्र सर्वे आगच्छतु ।
यहां सब आएँ ।

७ सर्वेभ्यः नमः, अस्तु ।
सबको नमस्कार हो ।

८ यूयं तत्र हि पठत ।
तुम सब वहां ही पढ़ो ।

९ अहं कुत्र गच्छामि ?
मैं कहां जाऊं ?

१० शं भवतु सदा ।
सदा कल्याण हो ।

अनुवाद Translation.

१ हम अब क्या करें ? (करवाम ?)
२ सब वहां जाएँ, (गच्छन्तु)
३ तू अखबार पढ़ (समाचार पत्रं पठ)
४ मैं यहां क्या करूं ? (करवाणि ?)
५ तुम सब मत दौड़ो (मा धावत)

दशमः पाठः Lesson X.

हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दाः।

'इदम्' शब्द यह This पुं० M.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्	इमौ	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्' शब्द This न० N.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

(शेषम् इदम् पुंलिङ्गवत्)

'इदम्' शब्द This स्त्री E.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्	इमे	इमाः
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः

च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयोः	आसु

(इदम्–तद्–यद्–किम्–युष्मद्–अस्मद्, शब्दों का सम्बोधन नहीं होता)

विशेषणानि Adjectives.

	पुं० M.	स्त्री० F.	न० N.
अच्छा	उत्तमः	उत्तमा	उत्तमम्
बुरा	अधमः	अधमा	अधमम्
ठंठा	शीतलः	शीतला	शीतलम्
गर्म	उष्णः	उष्णा	उष्णम्
सारा	सर्वः	सर्वा	सर्वम्
आधा	अर्धः	अर्धा	अर्धम्
पक्का	पक्वः	पक्वा	पक्वम्
कच्चा	अपक्वः	अपक्वा	अपक्वम्

वाक्य Sentences.

पुं० M.	स्त्री० F.	न० N.
१ अयं बालः उत्तमः अस्ति ।	१ इयं बाला उत्तमा अस्ति ।	१ इदं फलम् उत्तमम्, अस्ति ।
यह लड़का अच्छा है ।	यह लड़की अच्छी है ।	यह फल अच्छा है ।
२ इमे सर्वे अध्यापकाः सन्ति ।	२ इमाः सर्वाः अध्यापिकाः सन्ति ।	२ इमानि सर्वाणि मित्राणि सन्ति ।
ये सब अध्यापक हैं ।	ये सब अध्यापिकाएँ हैं ।	ये सब मित्र हैं ।

३ अस्मै श्रीशिवाय नमः ।	३ अस्यै श्रीशिवायै नमः ।	३ अस्मै श्रीमित्राय नमः ।
इस श्री शिव के लिये नमस्कार ।	इस श्री पार्वती के लिये नमस्कार ।	इस श्री मित्र के लिये नमस्कार ।
४ एभिः बालकैः सह क्रीडामि ।	४ आभिः बालिकाभिः साकं गायामि ।	४ एभिः मित्रैः सार्धं परिभ्रमामि ।
मैं इन लड़कों के साथ खेलता हूं ।	मैं इन लड़कियों के साथ गाती हूं ।	मैं इन मित्रों के साथ सैर करता हूं ।

अनुवाद Translation.

पुं० M.	स्त्री० F.	न० N.
१ बालक कहां पढ़ते हैं ?	१ बालिकाएँ वहां जाती हैं ।	१ मित्र यहां आते हैं ।
बालकाः कुत्र पठन्ति ?	बालिकाः तत्र गच्छन्ति ।	मित्राणि अत्र आगच्छन्ति ।
२ इस विद्यालय में ये सुलेख लिखते हैं ।	२ इस पाठशाला में ये गाती हैं ।	२ इस बाग़ में ये फल नहीं हैं ।
अस्मिन् विद्यालये इमे सुलेखं लिखन्ति ।	अस्यां पाठशालायाम् इमाः गायन्ति ।	अस्मिन् उद्याने इमानि फलानि न सन्ति ।
३ यह सारा समय अच्छा है ।	३ यह सारी घड़ी अच्छी है ।	३ यह सारा दिन अच्छा है ।
अयं सर्वः समयः शोभनः अस्ति ।	इयं सर्वा घटिका शोभना अस्ति ।	इदं सर्वं दिनं शोभनम् अस्ति ।



एकादशः पाठः Lesson XI

हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दाः ।

'तद्' शब्द + वह That पुं. M. 'तद्' शब्द वह स्त्री. F.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	सः	तौ	ते	सा	ते	ताः
द्वि०	तम्	तौ	तान्	ताम्	ते	ताः
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्याः	तयोः	तासाम्
स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्याम्	तयोः	तासु

'तत्' शब्द वह न० N. 'किम्' शब्द कौन

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.				
				पुं०	कः,	कौ,	के,
प्र०	तत्,	ते,	तानि	स्त्री०	का,	के,	काः,
द्वि०	तत्,	ते,	तानि	न०	किम्	के,	कानि,

(शेषं पुंलिङ्गवत्) (शेषं पूर्ववत्)

पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग शब्दाः M. F. Words.

पुं० M.	स्त्री० F.	पुं० M.	स्त्री० F.	पुं० M.	स्त्री० F.
पाठकः—	पाठिका	देवः—	देवी	श्रीमान्—	श्रीमती
अध्यापकः—	अध्यापिका	गोपः—	गोपी	भगवान्—	भगवती

बालकः—बालिका	कुमारः—कुमारी	भाग्यवान्—भाग्यवती
बालः—बाला	सिंहः—सिंही	बुद्धिमान्—बुद्धिमती
अश्वः—अश्वा	हस्ती—हस्तिनी	धनवान्—धनवती
अजः—अजा	विद्वान्—विदुषी	गुणवान्—गुणवती
एडकः—एडका	युवा—युवती	मानवान्—मानवती

वाक्य Sentences.

पुंलिङ्ग M.

१ ॐ नमः शिवाय ।
श्री शिव को नमस्कार ।

२ सः कुमारः किं करोति ?
वह कुमार क्या करता है ?

३ कस्य नरस्य अयम् अश्वः ?
किस आदमी का यह घोड़ा ?

४ बालकाः पाठकेन सह गच्छन्ति ।
लड़के अध्यापक के साथ जाते हैं ।

५ तस्मै देवाय नमः ।
उस देव को नमस्कार ।

स्त्रीलिङ्ग F.

१ ॐ शिवायै नमः ।
श्री पार्वती को नमस्कार ।

२ सा कुमारी कथयति कथाम् ।
वह कुँआरी लड़की कहानी कहती है ।

३ कस्याः नार्याः इयम् ? अश्वा ?
किस औरत की यह घोड़ी ?

४ बालिकाः पाठिकया समम् आगच्छन्ति ।
लड़कियाँ अध्यापिका के साथ आती हैं ।

५ तस्यै देव्यै नमः ।
उस देवी को नमस्कार ।

अनुवाद Translation.

पुंलिङ्ग M.

१ ये कौन आदमी हैं ?

इमे के नराः सन्ति ?

२ कुमार ! तू कहां जाता है ?

कुमार ! त्वं कुत्र गच्छसि ?

३ पिता को विद्वान् (पण्डितः) पुत्र प्रिय होता है ?

पितुः विद्वान् पुत्रः प्रियः भवति ।

४ वह कुत्ता भौंकता है ।

सः श्वा भषति ।

स्त्रीलिङ्ग F.

१ ये कौन औरतें हैं ?

इमाः काः नार्यः सन्ति ?

२ कुमारी ! तू क्या करती है ?

कुमारि ! किं करोषि ?

३ माता को विदुषी पुत्री प्रिय होती है ।

मातुः विदुषी (पण्डिता) पुत्री प्रिया भवति ।

४ वह कुत्ती कहां है ?

सा शुनी कुत्राऽस्ति ?



द्वादशः पाठः Lesson XII

हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दाः। पुं० स्त्री० न० M. F. N.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव	युवयोः	युष्माकम्
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'युष्मद्' तू-तुम Thou or you 'अस्मद्–' मैं, हम I or We.

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम	आवयोः	अस्माकम्
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

कृत्वा (त्वा) Perfect participle.

कर—कर के ।

पठ्—पठित्वा । स्था—स्थित्वा । चुर—चोरयित्वा । लिख—लिखित्वा, लेखित्वा। धाव—धावित्वा । कथ—कथयित्वा । खाद्—खादित्वा । हस्—हसित्वा । क्षल्—क्षालयित्वा । वद्—उदित्वा । रक्ष—रक्षित्वा । गण—गणयित्वा । चल्—चलित्वा । कृ—कृत्वा । पच्—पक्त्वा । पत्—पतित्वा । श्रु—श्रुत्वा । दृश्—दृष्ट्वा । वस्—उषित्वा । ज्ञा—ज्ञात्वा । प्रच्छ—पृष्ट्वा । क्रीड्—क्रीडित्वा । क्री—क्रीत्वा । गम्—गत्वा । नम्—नत्वा । ग्रह—गृहीत्वा । इष्—इष्ट्वा । भू—भूत्वा । मुच्—मुक्त्वा । दा—दत्त्वा । अस्—भूत्वा । षिच्—सिक्त्वा । पा—पीत्वा । भी—भीत्वा ।

वाक्य Sentences.

१ मोहन ! त्वं किं करोषि ?
हे मोहन ! तू क्या करता है ?

२ श्रीगुरो ! अहं पठामि ।
गुरुजी ! मैं पढ़ता हूं ।

३ तव किं नाम अस्ति ?
तेरा क्या नाम है ?

४ मम नाम देवशर्माऽस्ति ।
मेरा नाम देव शर्मा है ।

८ वयं पुस्तकं पठित्वा आगमिष्यामः गृहम् ।
हम पुस्तक पढ़कर घर आएँगे।

५ यूयं तत्र गत्वा किं करिष्यथ ?
तुम वहां जाकर क्या करोगे ?

६ आवां वस्त्राणि क्षालयित्वाऽधुनैव, आगमिष्यावः ।
हम दो कपड़े धोकर अभी आएंगे ।

७ कार्यं कृत्वा शीघ्रम् आगच्छ ।
काम कर के जल्दी आ ।

९ युष्माकं ध्यानं कुत्राऽस्ति ?
तुम्हारा ध्यान कहां है ?

१० भ्रातः ! मया सह पठ ?
हे भाई ! तू मेरे साथ पढ़ ?

अनुवाद Translation.

१ मैं तुम्हारे साथ अभी चलता हूं।

अहं युष्माभिः सह अधुनैव चलामि।

२ तुम मेरी ओर सौ रुपया जल्दी भेजो।

यूयं मां प्रति शत रूप्यकाणि शीघ्रम् प्रेषयत।

३ हम दोनों का आपस में बड़ा प्रेम है।

आवयोः परस्परं महत्प्रेमाऽस्ति।

४ तू सुलेख लिखकर मुझे दिखला।

त्वं सुलेखं लिखित्वा मां दर्शय।

५ गुरुजी को नमस्कार करके तुम दोनों घर जाओ।

श्रीगुरुं नत्वा युवां गृहं गच्छतम्।



त्रयोदशः पाठः Lesson XIII.

हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दाः, पुंल्लिङ्ग M.

'राजन्' राजा King

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि राजनि	राज्ञोः	राजसु
सं०	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

'श्रीमत्' धनवान्, शोभावान्,

	ए० S.	द्वि० D.	ब० P.
प्र०	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वि०	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृ०	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
च०	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
पं०	श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
ष०	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
स०	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सं०	हे श्रीमन् !	हे श्रीमन्तौ !	हे श्रीमन्तः !

ल्यप् (य) Perfect Participle.

उपसर्गसहितधातु Root. With Prefixes.

प्र+आ+रभ=प्रारभ्य प्रारम्भ करके।
सु+पठ्=सुपठ्य पढ़ कर।
सम्+लिख्=संलिख्य लिख कर।
प्र+णम्=प्रणम्य प्रणाम कर।
सम्+भू=संभूय मिल कर।
सम्+पृच्छ्=संपृच्छ्य पूछकर।
सम्+दृश्=संदृश्य देख कर।
उद्+स्था=उत्थाय उठ कर।
प्र+स्था=प्रस्थाय चल कर।
वि+धा=विधाय करके।
नि+धा=निधाय रख कर।
अभि+धा=अभिधाय कह कर।
सम्+धा=संधाय मेल कर।
प्र+दा=प्रदाय देकर।
आ+दा=आदाय लेकर।
उद्+डी=उड्डीय उड़ कर।
नमः+कृ=नमस्कृत्य नमस्कार करके।
वि+क्री=विक्रीय बेच कर।
सम्+आप्=समाप्य समाप्त करके।

वाक्य Sentences.

१ राजन्! सदा जयतु भवान्
हे राजन्! आप सदा जीतें।
२ राज्ञः इयम् अस्ति आज्ञा।
राजा की यह आज्ञा है।
३ राज्ञा सहैव राज्ञी आगच्छति।
राजा के साथ ही रानी आती है।
४ राज्ञां परस्परं भविष्यति संग्रामः
राजाओं का आपस में युद्ध होगा।
५ महता पुण्येन राज्यं मिलति
बड़े शुभकर्म से राज मिलता है।
६ श्रीमते गुरवे नमोनमः।
श्री मान् गुरु जी को नमस्कार २।
७ श्रीमद्भिः सह अयं कोऽस्ति?।
श्रीमानों के साथ यह कौन है?।

८ भगवन् ! प्रणमामि ।
हे ईश्वर ! मैं प्रणाम करता हूँ ।

९ परमात्मानं प्रणम्य सर्वं कार्यं कुरुत ।
तुम परमेश्वर को प्रणाम कर के सब काम करो ।

१० राजा कस्यचिदपि मित्रं नास्ति (न + अस्ति) ।
राजा किसी का भी मित्र नहीं ।

अनुवाद Translation.

१ हे भगवन् ! आप की लीला विचित्र है ।
हे भगवन् ! भवतः लीला विचित्राऽस्ति ।

२ श्रीमान् लेखराज सुलेख लिख कर कब आएगा ?
श्रीमान् लेखराजः सुलेखं सुलिख्य कदा आगमिष्यति ?

३ मैं राजा से पूछ कर ही कहूंगा ।
अहं राज्ञः संपृच्छ्य हि कथयिष्यामि ।

४ वसुदेव के पुत्र भगवान् कृष्ण को नमस्कार ।
ओं नमो भगवते वासुदेवाय ।

५ काम समाप्त कर के ही घर जाऊंगा ।
कार्यं समाप्य हि गृहं गमिष्यामि ।

६ राजन् ! आप की सदा जय हो ।
भो राजन् ! भवतः भवतु सदा जयः ।



चतुर्दशः पाठः Lesson XIV.

सङ्ख्यावाचक शब्दाः Numerals.

	अङ्काः	संस्कृत			English.
		पुं० M.	स्त्री० F.	न० N.	
एक	१	एकः	एका	एकम्	One.
द्वि	२	द्वौ	द्वे	द्वे	Two.
त्रि	३	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	Three
चतुर्	४	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि	Four.
पञ्चन्	५	पञ्च	पञ्च	पञ्च	Five.
षष्	६	षट्	षट्	षट्	Six.
सप्तन्	७	सप्त	सप्त	सप्त	Seven.
अष्टन्	८	अष्ट	अष्ट	अष्ट	Eight.
नवन्	९	नव	नव	नव	Nine.
दशन्	१०	दश	दश	दश	Ten.

तुमुन् (तुम्) Infinitive of Purpose.

(लिये, वास्ते, को)

पठ्	पठितुम्	नम्	नन्तुम्	हृ	हर्तुम्
लिख्	लेखितुम्	दा	दातुम्	कृ	कर्तुम्
खाद्	खादितुम्	पा	पातुम्	श्रु	श्रोतुम्
वद्	वादितुम्	स्था	स्थातुम्	भू	भवितुम्
चल्	चलितुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्	चुर्	चोरयितुम्

क्री	क्रेतुम्	धाव्	धावितुम्	क्षल	क्षालयितुम्
विक्री	विक्रेतुम्	हस्	हसितुम्	गण	गणयितुम्
पच्	पक्तुम्	रक्ष्	रक्षितुम्	ग्रह	ग्रहीतुम्
दृश्	द्रष्टुम्	वस्	वस्तुम्	परिभ्रम्	परिभ्रमितुम्
प्रच्छ	प्रष्टुम्	क्रीड्	क्रीडितुम्		
गम्	गन्तुम्	कथ	कथयितुम्		

वाक्य Sentences.

१ सुलेखं लेखितुं कुत्रास्ति मम लेखनी ?
सुलेख लिखने के लिये मेरी लेखनी कहां है ?

२ त्रयः बालकाः तिस्रः बालिकाः च पठितुं गच्छन्ति पाठशालाम्
तीन लड़के और तीन लड़कियाँ पढ़ने के लिये पाठशाला जाती हैं ।

३ खादितुम् इमानि सप्त फलानि
खाने के लिये ये सात फल।

४ गन्तुं न इच्छामि तत्र ।
मैं वहां जाने के लिये नहीं चाहता ।

५ तिस्रः कन्याः गङ्गायां स्नातुं हरिद्वारम् अगच्छन् ।
तीन कन्याएँ गङ्गा में नहाने के लिये हरिद्वार को चली गई।

६ अद्याऽहं कथां श्रोतुम् आगमिष्यामि ।
आज मैं कथा सुनने के लिये आऊंगा ।

७ चत्वारः बालकाः अत्र क्रीडन्ति
चार लड़के यहां खेलते हैं ।

८ चतस्रः बालिकाः कुत्र गायन्ति?
चार लड़कियाँ कहां गाती हैं ?

९ चत्वारि मित्राणि तत्र न सन्ति।
चार मित्र वहां नहीं हैं ।

१० गन्तुं सज्जीभूताः वयम् ।
जाने के लिये हम तय्यार हैं।

अनुवाद Translation.

१ मैं सैर करने के लिये बाहर जाता हूं ।
अहं परिभ्रमितुं बहिर्गच्छामि ।

२ आज वह भात पकाने के लिये नहीं आएगी ।
अद्य सा ओदनं पक्तुं नागमिष्यति ।

३ ये तीन फल बड़े ही मीठे हैं,
इमानि त्रीणि फलानि अतीव मधुराणि सन्ति ।

४ हम पानी पीने के लिये छबील (प्याऊ) को जाते हैं ।
वयं पानीयं पातुं प्रपां गच्छामः ।

५ तीन औरतें और तीन आदमी गीत कहां गाते हैं ? ।
तिस्रः नार्यः त्रयः नराः च कुत्र गीतं गायन्ति ? ॥



पञ्चदशः पाठः Lesson XV.

(पठन पाठन सम्बन्धि शब्दाः)

पाठशाला, स्त्री० } स्कूल
विद्यालय पुं० }

अध्यापक } पुं० विद्या पढ़ानेवाला
पाठक }

विद्यार्थिन् } पुं० विद्यार्थी
छात्र }

शिष्य—चेला

पुस्तक न० } पोथी
ग्रन्थ पुं० }

श्रेणी—स्त्री० कक्षा

पठन—न० पढ़ना

पाठन—न० पढ़ाना

स्मरण—न० याद करना

सुलेख—पुं० सुन्दर लिखना

प्रश्न—पुं० पूछना, सवाल

उत्तर—न० जबाब

मसी—स्त्री० स्याही

महाविद्यालय—पुं० कालेज

छात्रालय—पुं० विद्यार्थियों के रहने का स्थान, Boarding house

मसीपात्र—न० मसीधानी, दवात

लेखनी—स्त्री० लिक्खन, कलम

पत्र—न० पन्ना, कागज़

पृष्ठ—न० पत्र का एक ओर, सफा

लेखन—न० लिखना

कृष्णपट्ट—बोर्ड, तख्ती

(शरीर सम्बन्धि शब्दाः)

शरीर न० } शरीर
देह पुं० }

शीर्ष—न० सिर

ललाट—न० माथा

ओष्ठ—पुं० होंठ, ओंठ

दन्त—पुं० दाँत

जिह्वा—स्त्री० जीभ

ग्रीवा—स्त्री० गर्दन

कण्ठ } पुं० गला
गल }

हृदय—न० मन, छाती

उदर—न० पेट

मुख—न० मुँह, मुखड़ा
नेत्र—न० आँख
कर्ण—पुं० कान
नासिका—स्त्री० नाक
भुज } पुं० भुजा, बाँह
बाहु }
हस्त—पुं० हाथ
अङ्गुष्ठ—पुं० अंगूठा
अङ्गुली—स्त्री० अंगुली
नख—पुं० न० नाखून
पृष्ठ—न० पीठ
जङ्घा—स्त्री० जांघ
जानु—पुं० न० घुटना, गोडा
पाद—पुं० पांव, पाओं, पैर
केश } पुं० } सिर के बाल,
वाल } पुं० }
शिखा—स्त्री० चोटी

वाक्य Sentences.

१ वयं पाठशालायां पठामः
हम पाठशाला में पढ़ते हैं
२ अध्यापकाः अत्र आगच्छन्ति
पाठक यहां आते हैं
३ छात्राः पुस्तकानि गृह्णन्ति
विद्यार्थी पुस्तक लेते हैं
४ लेखराजः सुलेखं न लिखति
लेखराज सुलेख नहीं लिखता है
५ मसीपात्रे नास्ति मसी
दवात में स्याही नहीं है
६ अस्ति मम एकः प्रश्नः
मेरा एक प्रश्न (सवाल) है
७ अस्य उत्तरं कः दास्यति ?
इसका जबाब कौन देगा ?
८ अस्यां श्रेण्यां दशबालकाः सन्ति
इस जमात में दस लड़के हैं
९ विद्यापठनेन अज्ञानं नश्यति (नष्टं भवति)
विद्या पढ़ने से अज्ञान दूर हो जाता है
१० कृष्णपट्टं शीघ्रम् आनय
बोर्ड जल्दी ला ।

अनुवाद Translation.

१ मेरे सिर में पीड़ा है। (मम शीर्षे पीडाऽस्ति)

२ उसका गला मीठा नहीं है। (तस्य कण्ठः मधुरः नास्ति)

३ पेटपीड़ा से वह अति दुःखी है।

(उदरपीडया सः अति व्याकुलः अस्ति)

४ हम हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हैं।

(हस्तौ सुयोज्य वयं नमामः)

५ उस्ताद दोनों हाथों से शिष्य को पीटता है।

(पाठकः हस्ताभ्यां शिष्यं ताडयति)

६ तुम सदा ईश्वर का भजन करो।

(सदा ईश्वरस्य भजनं (भक्तिं) कुरुत)



षोडशः पाठः Lesson XVI.

(सम्बन्धसम्बन्धि शब्दाः)

पितृ, जनक — पुं० पिता

पितामह—पुं० बाबा, दादा

प्रपितामह — पुं० परदादा

मातृ, जननी — स्त्री० माता, माँ

पितामही—स्त्री० दादी

प्रपितामही—स्त्री० परदादी

पितृव्य—पुं० चाचा

पितृव्यपत्नी—स्त्री० चाची

पितृव्यपुत्र—पुं० चचेरा भाई, पितरेर भाई

भ्रातृ—पुं० भाई

सहोदर—पुं० सगा भाई

भ्रातृजाया—स्त्री० भरजाई, भौजाई

भ्रातृसुत, भ्रातृपुत्र, भ्रात्रीय — पुं० भतीजा

भ्रातृसुता, भ्रातृपुत्री — स्त्री० भतीजी

मातामह—पुं० नाना

मातुली—स्त्री० मामी

मातुलसुत—पुं० मामेका लड़का,

श्वसुर—पुं० ससुर, सौरा

श्वश्रू—स्त्री० सास

पत्नी—स्त्री० अपनी स्त्री, धर्मपत्नी

देवर—पुं० देवर, डेर

यातृ—स्त्री० देवरानी, डिराणी

ननान्दृ—स्त्री० ननद, निनाण

श्याल—पुं० साला

पुत्र—पुं० बेटा

पौत्र—पुं० पोता

प्रपौत्र—पुं० परो (ड़ो) तरा

पुत्री—स्त्री० बेटी

पौत्री—स्त्री० पोती

प्रपौत्री—स्त्री० परपोती

जामातृ—पुं० जवाँई, दामाद

भगिनी—स्त्री० भैण, बहिन

भगिनीपति—पुं० बहनोई। भणवैय

भागिनेय—पुं० भानजा, भणेआ

पितृस्वसृ—स्त्री० फूआ, फूफी

पितृष्वसृपति—पुं० फूफड़

प्रमातामह—पुं० परनाना
वृद्धप्रमातामह—पुं० वृद्धपरनाना
मातामही—स्त्री० नानी
प्रमातामही—स्त्री० परनानी
वृद्धप्रमातामही—स्त्री० वृद्धपरनानी
मातुल—पुं० मामा

पैतृष्वस्रीय, पैतृष्वस्रेय }पुं० फूफेरा भाई
मातृष्वसृ—स्त्री० मासी
मातृष्वसृपति—पुं० मासड़
मातृष्वस्रीय, मातृष्वस्रेय }पुं० मसेरा भाई

वाक्य Sentences.

१ भ्राता लवपुरं गमिष्यति।
भाई लाहौर जाएगा।

२ तस्य पुत्री विदुषी नास्ति।
उसकी बेटी पण्डिता नहीं है।

३ तव मातामहः किं करोति।
तेरा नाना क्या करता है?

४ अयं मम सहोदरः अस्ति।
यह मेरा सगा भाई है।

५ कस्य पुत्रः परीक्षां दास्यति?
किसका बेटा इम्तिहान देगा?

६ श्रीजनन्यै (श्रीमात्रे) नमः।
माताजी को नमस्कार।

७ श्रीजनक! (श्रीपितः!) प्रणमामि।
पिताजी! मैं प्रणाम करता हूं।

८ युष्माकं पौत्रः कदा आगमिष्यति?
तुम्हारा पोता कब आएगा?

९ अस्माकं भ्रातृपुत्रः कुत्राऽस्ति?
हमारा भतीजा कहां है?

१० अत्र नास्ति पितामहः।
बाबा (दादा) यहां नहीं है।

अनुवाद Translation.

१ श्रीकृष्णस्य (वासुदेवस्य) पिता वसुदेवः आसीत् । माता च यशोदा ।

कृष्णजी का पिता वसुदेव था, और माता यशोदा थी ।

२ भ्रात्रा सह राजमार्गे परिभ्रमामि ।

मैं भाई के साथ शाही सड़क पर सैर करता हूं ।

३ भ्रातृसुतायाः (भ्रातृपुत्र्याः) विवाहः भविष्यति ।

भतीजी की शादी होगी ।

४ अयं कस्य भागिनेयः अस्ति ?

यह किस का भानजा (भणेश्वा) है ?

५ मातरं पितरं च नमामि ।

मैं माता और पिता को नमस्कार करता हूं ।



सप्तदशः पाठः Lesson XVII.

(पुरुषविशेषसम्बन्धि शब्दाः) पुं M.

तुन्दिल—बड़े पेटवाला

वामन—छोटे शरीरवाला, मन्थरा

अन्ध—अंधा

काण—काणा

बधिर—बहिरा, डोरा

कुब्ज—कुबड़ा, कुब्बा

पङ्गु } लंगड़ा
खञ्ज }

नाविक } मल्लाह
कर्णधार }

स्वर्णकार—सुनार

मालाकार—माली

कुम्भकार—कुम्हार

चर्मकार—चमार

लोहकार—लोहार

चित्रकार—चित्र बनानेवाला

तैलकार—तेली

द्यूतकार—जुआरी

प्रतिहार } दरबान
द्वारपाल }

शस्त्रमार्ज—सिकलीगर

रङ्गाजीव—लिलारी

आहितुण्डिक—सांपपकड़नेवाला, सँपेरा, सपाधा, मदारी

ऐन्द्रजालिक—मदारी, बाजीगर

भारवाह—मजदूर, कुली

सौचिक—दर्जी

रजक—धोबी

तन्तुवाय—जुलाहा, पावली

नापित—नाई

व्याध—शिकारी

तक्षक—तरखान, बढ़ई

(जीवजन्तु सम्बन्धि शब्दाः)

सिंह—पुं० शेर

सिंही—स्त्री० शेरनी

व्याघ्र—पुं० बाघ, बघेला

मृग—पुं० हरिण, हिरन

गो—स्त्री० गौ, गाय

गो—पुं० बैल, बलद

सूकर—पुं० सूअर

ऋक्ष
भालूक } पुं० रीछ भालु

गण्डक—पुं० गैंडा

वृक—पुं० भेड़िया

शृगाल—पुं० गीदड़

शृगाली—स्त्री० गीदड़ी

महिष—पुं० भैंसा

महिषी—स्त्री० भैंस

अज—पुं० बकरा

अजा—स्त्री० बकरी

शशक—पुं० सहा, खरगोश

वानर—पुं० बंदर

गज—पुं० हाथी

अश्व (घोटक)—पुं० घोड़ा

उष्ट्र—पुं० ऊँट,

गर्दभ—पुं० गधा

कुक्कुर
श्वन् } पुं० कुत्ता

कुक्कुरी
शुनी } स्त्री० कुत्ती

मार्जार—पुं० बिल्ला

मार्जारी—स्त्री० बिल्ली

मूषक—पुं० चूहा

मूषिका—स्त्री० चूही

वाक्य Sentences.

१ भगवते श्रीवामनाय नमः
भगवान् वामनजी को नमस्कार

२ नावं चालयति नाविकः
मल्लाह बेड़ी चलाता है

३ मालाकारः न वसति उद्याने
माली बाग में नहीं रहता है

४ रजकः क्षालयति वस्त्राणि
धोबी कपड़े धोता है

५ कुम्भकाराः कुम्भान्
(घटान्) कुर्वन्ति (रचयन्ति)
कुम्हार घड़े बनाते हैं

६ सिंहः सिंही च चिरं निवसतः
अत्र
शेर और शेरनी यहां देर से रहते हैं

७ इयं गौः शोभनाऽस्ति
यह गाय अच्छी है ।

८ अयं गौः शोभनः नाऽस्ति। यह बैल अच्छा नहीं है।

९ मार्जारी पिबति दुग्धम्। बिल्ली दूध पीती है।

१० मृगाः (हरिणाः) वनं प्रति धावन्तितस्म।
हिरन जंगल की ओर भाग गये।

११ इयं गौः, अयं गौः। यह गाय (गऊ), यह बैल।

अनुवाद Translation.

१ पङ्गुः लगुडं गृहीत्वा शनैः शनैः चलति।
लंगड़ा लाठी लेकर धीरे २ चलता है।

२ नटः नटी च मधुरं गायतः।
नट और नटी मीठा गाते हैं।

३ पानीयं पातुं व्याधाः नदीं गच्छन्ति।
पानी पीने के लिये शिकारी दरिया को जाते हैं।

४ अस्ति धूर्तः शृगालः पशुषु।
पशुओं में गीदड़, चालबाज़ है।

५ अस्यां रथ्यायां कुक्कुरः (श्वा) कुक्कुरी (शुनी) च भषतः।
इस गली में कुत्ता और कुत्ती भौंकते हैं।



अष्टादशः पाठः Lesson XVIII.

(पक्षिसम्बन्धि शब्दाः)

हंस—पुं० हंस
मयूर—पुं० मोर
श्येन—पुं० बाज़
कोकिला—पुं० कोयल
कोकिला—स्त्री० कोयल
शुक—पुं० तोता
सारिका—स्त्री० मैना
कपोत—पुं० कबूतर
चातक—पुं० पपीहा
खञ्जन—पुं० ममोला
वर्तक— पुं० } बतक
वर्तिका— स्त्री० } बतक
टिट्टिभ—पुं० टिटिहर

टिट्टिभी—स्त्री० टिटिहरी
चिल्ल—पुं० चील
काक—पुं० काग, कौआ
गृध्र—पुं० गिद्ध, गीध
कुक्कुट—पुं० मुर्गा, कुक्कुड़
चक्रवाक—पुं० चकवा
तित्तिरि—पुं० तीतर, तित्तिर
लाव—पुं० बटेर
चकोर—पुं० चकोर
बक—पुं० बगुला
उलूक—पुं० उल्लू
चटक—पुं० चिड़ा
चटका—स्त्री० चिड़िया, चिड़ी

(फल सम्बन्धि शब्दा) नपुंसकलिङ्गः N.

आम्रफल—आम
नारिकेलफल—नारियल
नारङ्गफल—नारङ्गी, सन्तरा
सेवफल—सेव
अमृतफल—नाख, नासपाती
खर्जूरफल—खजूर, पिंड
जम्बूफल—जामुन, जम्मू
दाडिमफल—अनार
कदलीफल—केला
बदरीफल—बेर

बिल्वफल—बेल
जम्बीरफल—नींबू
पीलुफल—पीलू
अङ्कोटफल—पिस्ता
बादामफल } बदाम, बादाम,
वातादफल } बिदाम
दशाङ्गुलफल—खरबूज़ा, रींडी
कालिन्दफल } तरबूज
कालिङ्गफल } हिंदवाणा
कर्कटीफल—तर, ककड़ी

अक्षोटफल—अखरोट

पूगफल } सुपारी
पूगीफल }

द्राक्षाफल—दाख, धाख, किसमिस

त्रपुसफल—खीरा

एलाफल—इलायची

लवङ्गफल—लौंग

वाक्य Sentences.

१ पक्षिषु हंसः श्रेष्ठः अस्ति ।
पंछियों में हंस श्रेष्ठ है ।

२ कोकिला मधुरं वदति ।
कोयल मीठा बोलती है ।

३ काकः पक्षिषु चाण्डालः ।
कौआ पंखियों में नीच है ।

४ पालयन्ति लोकाः शुकान् ।
लोग तोते पालते हैं ।

५ बकाः मत्स्यान् भक्षयन्ति ।
बगले मछलियाँ खाते हैं ।

६ आम्रफलम् अतिमधुरम् अस्ति ।
आम का फल बड़ा मीठा है ।

७ जले पतन्ति जम्बूफलानि ।
पानी में जामुन गिरते हैं ।

८ बदरीफलानि शीघ्रम् आनय ।
तू बेर जल्दी ला ।

९ कालिङ्गफलं रोचते मह्यम् ।
तरबूज मुझे भाता है ।

१० दशाङ्गुलफलं नाऽस्ति पक्वम् ।
खरबूजा कच्चा है, पक्का नहीं ।

अनुवाद Translation

१ चकोराः चन्द्रिकां दृष्ट्वा प्रसीदन्ति ।
चकोर चांद की चांदनी को देखकर प्रसन्न होते हैं ।

२ कुत्र उड्डीयन्ते कपोताः ?
कबूतर कहां उड़ते हैं ?

३ श्येनः अत्र नाऽस्ति, तत्राऽस्ति ।
बाज़ यहां नहीं है, वहां है ।

४ इमानि बदरीफलानि पक्वानि सन्ति ।
ये बेर पक्के हैं ।

५ एलाफलानि अतिशीघ्रम् आनयत ।
तुम इलायचियाँ बहुत जल्दी लाओ ।

नवदशः (एकोनविंशः) पाठः Lesson XIX.

(भक्ष्यपेयसम्बन्धिशब्दाः)

सिद्धान्न—न० पका हुआ अन्न	नवनीत—न० मक्खन, माखन
आमान्न—न० कच्चा अन्न	दधि—न० दही
गोधूमचूर्ण—पुं० न० गेहूं का आटा	तक्र—न० छाछ, लस्सी
पायस—न० खीर	मथित—न० मट्ठा
संयाव—पुं० सीरा, हलवा	कूर्चिका, किलाटिका } स्त्री० मलाई, मावा, खोआ, खोया, खोवा
मिष्टान्न—न० मिठाई	
पक्वान्न—न० पकवान	
मोदक-, लड्डु- } पुं० लड्डू पेड़ा	ओदन—पुं० न० भक्त, भात
	यवागू—स्त्री० लपसी, पतला भात
अपूप—पुं० पूड़ा	सक्तु—पुं० सत्तू
शष्कुली—स्त्री० पूड़ी (री)	तेमन—न० कढ़ी
व्यञ्जन—न० सबज़ी	रोटिका—स्त्री० रोटी
दुग्ध—न० दूध	सूप—पुं० दाल
घृत—न० घी	शाक—पुं० न० साग

गणीय क्रिया—णिजन्त क्रिया	गणीय क्रिया—णिजन्त क्रिया
पठ्—पठति, पाठयति	तॄ—तरति, तारयति
लिख—लिखति, लेखयति	कृ—करोति, कारयति
खाद्—खादति, खादयति	ग्रह्—गृह्णाति, ग्राहयति
पा—पिबति, पाययति	रुद्—रोदिति[1], रोदयति

---

१. रुदादिभ्यः सार्वधातुके ७।२।७५ इतीट्।

गणीय क्रिया–णिजन्त क्रिया	गणीय क्रिया–णिजन्त क्रिया
ज्ञा–जानाति, ज्ञापयति	चल्–चलति, चालयति
दा–ददाति, दापयति	हस्–हसति, हासयति
घ्रा–जिघ्रति, घ्रापयति	पत्–पतति, पातयति
स्था–तिष्ठति, स्थापयति	पच्–पचति, पाचयति
भी–बिभेति, भीषयति	जागृ–जागर्ति, जागरयति
श्रु–शृणोति, श्रावयति	स्वप्–स्वपिति, स्वापयति
दृश्–पश्यति, दर्शयति	उपविश्–उपविशति, उपवेशयति
गम्–गच्छति, गमयति	भू–भवति, भावयति
नी–नयति, नाययति	स्ना–स्नाति, स्नापयति
स्मृ–स्मरति, स्मारयति	

वाक्य Sentences.

१ अमृतं हि गवां क्षीरम्
गौओं का दूध अमृत ही है

२ सद्यः शक्तिकरं पयः
दूध तत्काल बलदेनेवाला है

३ मिष्टान्नं भक्षयामि
मैं मिठाई खाता हूं

४ तुभ्यं किं रोचते ?
तुझे क्या भाता हैं ?

५ भोजनान्ते पिबेत् तक्रम्
भोजनके अन्त में छाछ पिये

६ पायसं सर्वोत्तमम् अस्ति
खीर सब से श्रेष्ठ है

७ मथितं वा तक्रं पास्यन्ति भवन्तः
आप मट्ठा वा लस्सी पीवेंगे (पियेंगे)

८ वयम् अपूपान् खादिष्यामः
हम पूड़े खाएँगे

९ अस्ति रोगिणां कृते ओदनम्
बीमारों के लिये भात है

१० पर्पटं भक्षयन्तु भवन्तः श्रीमन्तः
श्रीमान् आप पापड़ खाएँ

अनुवाद Translation.

१ भाई ! तू मेरे लिये लड्डू दे ।

भ्रातः ! मदर्थं लड्डुकान् देहि ।

२ वह मुझे डराता है, यह अच्छा नहीं है ।

सः मां भीषयति, इदं नास्ति शोभनम् ।

३ मैं ठंडा पानी पिलाता हूं ।

अहं शीतलं जलं पाययामि ।

४ हम मित्र की तस्वीर (फोटो) दिखलाते हैं ।

वयं मित्रस्य चित्रं दर्शयामः ।

५ आज कल कौन उसे पढ़ाता है ?

अद्यश्वः (अद्यत्वे) कः तं पाठयति ?



विंशः पाठः Lesson XX.

(तव्य Adjective Participle चाहिये)

पठ्—पठितव्यः-व्या-व्यम्
लिख्—लेखितव्यः-व्या-व्यम्
खाद्—खादितव्यः-व्या-व्यम्
ज्ञा—ज्ञातव्यः-व्या-व्यम्
पा—पातव्यः-व्या-व्यम्
दा—दातव्यः-व्या-व्यम्
दृश्—द्रष्टव्यः-व्या-व्यम्
पच्—पक्तव्यः-व्या-व्यम्
गम्—गन्तव्यः-व्या-व्यम्
आ+गम्—आगन्तव्यः-व्या-व्यम्
प्रच्छ—प्रष्टव्यः-व्या-व्यम्
कृ—कर्तव्यः-व्या-व्यम्
श्रु—श्रोतव्यः-व्या-व्यम्
तृ—तरितव्यः-व्या-व्यम्
क्रीड्—क्रीडितव्यः-व्या-व्यम्
नम्—नन्तव्यः-व्या व्यम्
कथ—कथितव्यः-व्या-व्यम्
भू—भवितव्यः-व्या-व्यम्
क्री—क्रेतव्यः-व्या-व्यम्
वि+क्री-विक्रेतव्यः-व्या-व्यम्
ग्रह—ग्रहीतव्यः-व्या-व्यम्
भी—भेतव्यः-व्या-व्यम्

वाक्य Sentences.

१ पठितव्यः ग्रन्थः । गीता पठितव्या । पत्रं पठितव्यं त्वया ।
ग्रन्थ पढ़ना चाहिये । गीता पढ़नी चाहिये । तुझे चिट्ठी पढ़नी चाहिये ।

२ भवितव्यं (भवितव्यता) भवत्येव ।
होनहार (भावी) होती ही है ।

३ मया किं कर्तव्यम् ? मुझे क्या करना चाहिये ?

४ शीघ्रमेव आगन्तव्यं भवता । आपको झटपट (जल्दी ही) आना चाहिये ।

५ कथा श्रोतव्या सदा । सदा कथा सुननी चाहिये ।

अनुवाद Translation.

१ मित्रं प्रति पत्रं प्रेषितव्यम् ।

मित्र की ओर पत्र भेजना चाहिये ।

२ काशीपुरी द्रष्टव्या ।

काशीपुरी देखनी चाहिये ।

३ दुर्वचनं न वक्तव्यम् ।

दुर्वचन नह कहना चाहिये ।

इति द्वितीयो भागः समाप्तः ।



तृतीयः भागः PART III.

प्रथमः पाठः Lesson I.

(तिथयः पञ्चदश)

१ प्रतिपदा	६ षष्ठी	११ एकादशी
२ द्वितीया	७ सप्तमी	१२ द्वादशी
३ तृतीया	८ अष्टमी	१३ त्रयोदशी
४ चतुर्थी	९ नवमी	१४ चतुर्दशी
५ पञ्चमी	१० दशमी	१५ पूर्णिमा

(३० अमावस्या)

(मासाः द्वादश)

१ वैशाख	५ भाद्रपद	९ पौष
२ ज्येष्ठ	६ आश्विन	१० माघ
३ आषाढ	७ कार्तिक	११ फाल्गुन
४ श्रावण	८ मार्गशीर्ष	१२ चैत्र

(वाराः सप्त)

१ रविवार (आदित्यवार)	५ बृहस्पतिवार (गुरुवार)
२ सोमवार (चन्द्रवार)	६ शुक्रवार (भृगुवार)
३ मङ्गलवार (भौमवार)	७ शनिवार (शनैश्चरवार)
४ बुधवार (सौम्यवार)	

१ तिथयः पञ्चदश सन्ति । तिथियाँ पन्द्रह हैं ।

२ एकादश्यां कुर्वन्ति केचित् फलाहारम् ।

एकादशी में कई फलहार करते हैं ।

३ अष्टमी श्रीदुर्गादेव्याः तिथिः। अष्टमी दुर्गादेवीजी की तिथि है।

४ पूर्णिमायां श्रीसत्यनारायणस्य व्रतं भवति।
पूर्णमासी (पुन्या) में सत्यनारायणजी का व्रत होता है।

५ अमावस्यायां पितृभ्यः हन्तकारः दीयते।
अमावस्यां में पितरों के लिये हन्तकार (हंदा) दिया जाता है।

६ सर्वसिद्धा त्रयोदशी। त्रयोदशी तिथि सर्वसिद्ध है।

७ प्रतिपदा पाठनाशिनी।
परिवा-पड़वा-एकम में पड़ा हुआ संस्कृत पाठ निष्फल होता है।

८ ज्येष्ठे मासे अति उष्णता भवति।
जेठ महीने में बड़ी गरमी होती है।

९ कार्तिके प्रातः स्नानं कुर्वन्ति स्त्रियः पुरुषाः।
कार्तिक मास में प्रात:काल स्त्रियाँ पुरुष नहाते हैं।

१० रविवारे सूर्यस्य पूजापाठौ विशेषतः कर्तव्यौ।
ऐतवार में सूरज का पूजापाठ विशेष करना चाहिये।

अनुवाद Translation.

ऐतवार स्कूल-कालेज-कचहरी आदि स्थानों में छुट्टी होती है।

१ आदित्यवारे विद्यालय-पाठशाला-महाविद्यालयन्यायालयादि-स्थानेषु अवकाशः भवति।
अष्टमीतिथि में श्रीदुर्गा का आराधन विशेषरीति से लोग करते हैं।

२ अष्टम्यां तिथौ श्रीदुर्गायाः आराधन विशेषरीत्या कुर्वन्ति लोकाः।
कार्तिक की अमावास्या में दीपावली का बड़ा उत्सव हिन्दुस्तान होता है।

३ कार्तिकस्य अमावस्यायां दीपमालायाः (दीपावल्याः) महान् उत्सवः भवति भारतवर्षे।

द्वितीयः पाठ Lesson II.

उपदेशाः Advices counsels.

१—उद्यमेन हि सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति, नहि केवलविचारकरणेन। परिश्रमं विना किमपि कृत्यं न सिध्यति। विद्या, धनम्, अन्नम्, मानम्, इत्यादि सकलम् उद्योगविधानेन खलु मिलति। अतः पुरुषेण सदा पुरुषार्थः कर्तव्यः।

उद्यम से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं, केवल विचार करने से नहीं। परिश्रम के बिना कोई भी काम सिद्धि नहीं होता है। विद्या, धन, अन्न, मान इत्यादि सब उद्योग करने से ही मिलता है। इसलिये पुरुष को सदा उद्यम करना चाहिये।

२—सज्जनजनस्य सङ्गत्या लोके (संसारे) सुखं भवति कीर्तिः च, दुर्जनस्य च सङ्गेन दुःखं निन्दा च भवतः। दुष्टेन सह मेलः कदापि न विधेयः (करणीयः)।

भले पुरुष की सङ्गत से जगत् में सुख और यश होता है, और दुष्टजन की सङ्गति से दुःख और निन्दा होती है। नीच का सङ्ग कभी नहीं करना चाहिये।

३—मधुरभाषणेन प्रसन्नाः भवन्ति लोकाः, न कटुभाषणेन। कोकिलस्याऽऽलापः सर्वस्य प्रियो भवति, काकस्य चाऽप्रियः। मधुरकथनं (सूक्तिः) वशीकरणस्यास्ति मन्त्रः।

मीठा बोलने से सब लोग प्रसन्न (खुश) होते हैं, कड़वे वचन से नहीं। कोयल का बोलना सबको प्यारा लगता है और कौए का बुरा। मीठा बोलना वशीकरण मन्त्र है।

४—धर्मेण हि सर्वस्य रक्षा भवति। दुर्लभं मानुषशरीरं धृत्वा ये धर्मकर्म नाऽऽचरन्ति, अन्ते ते पश्चात्तापं कुर्वन्ति। धर्मेण हि सुखं भवति, अधर्मेण च दुःखम्।

धर्म से ही सबकी रक्षा होती है। कठिनता से मिलने वाले (अनोखे) मनुष्य चोले को धारण कर जो धर्म के कार्य नहीं करते हैं, वे अन्त में पछताते हैं। धर्म से सुख होता है, और अधर्म (पाप) से दुःख।

५—प्रातःकाले उत्थाय स्वपाठः पठनीयः (स्मरणीयः), सायं समये च न पठनीयं—न शयनीयं न च भोजनीयम्, किन्तु ईश्वर-परमात्मनः प्रेम्णा करणीयं भजनम्। मध्याह्नवेलायां भोजनं भोक्तव्यम् (सन्था पन्थाः प्रातःकाले)।

प्रातःकाल उठकर अपना पाठ (संथा) याद करना चाहिये, और सायं (सन्ध्या के समय) न पढ़ना चाहिये, न सोना चाहिये, और नहीं भोजन खाना चाहिये, किन्तु ईश्वर परमात्मा भगवान् का प्रेम से भजन करना चाहिये।

६—स्नानं सर्वदा (प्रतिदिनम्) कर्तव्यम्। स्नानकरणेन शरीरं स्वच्छं (निर्मलम्) भवति, चित्तं च प्रसन्नम्, ततः सन्ध्या विधातव्या (करणीया) ईश्वरभक्तिश्च।

प्रतिदिन सदा (हररोज़) नहाना चाहिये, स्नान करने से शरीर निर्मल होता है और मन प्रसन्न, फिर सन्ध्या और ईश्वर-भक्ति करनी योग्य है।

७-विद्या परिश्रमेण पठनीया । विद्यां (विद्यया, विद्यायाः) विना पशुतुल्यो भवति नरः (विद्याविहीनः पशुः) राज्ञः स्वदेशे हि भवत्याऽऽदरः, परन्तु विद्यावतः (विदुषः) देशे विदेशे (परदेशे) च भवति सम्मानः (प्रतिष्ठा) विद्या सर्वस्य भूषणम् ।

विद्या परिश्रम (उद्यम—मेहनत) से पढ़नी चाहिये । विद्या के विना मनुष्य पशु के तुल्य (बराबर) हुआ करता है । राजा का मान अपने देश में ही होता है, परन्तु विद्वान् का सम्मान देश और परदेश में होता है । विद्या सबका भूषण (गहना) है ।

८—यः मलिनानि वस्त्राणि धारयति, दन्तधावनेन दन्तानां मलं न दूरीकरोति, अतिभोजनं भक्षयति, कटुवचनं सदा वदति, तथा सूर्यस्य उदयसमयेऽस्तकाले च स्वपिति, तस्य पार्श्वे लक्ष्मीः न निवसति ।

जो मैले कपड़े पहनता है, दातुन से दांतों की मैल को दूर नहीं करता है, बहुत भोजन खाता है, सदा कड़ुवा बोल बोलता है, और सूरज के चढ़ने तथा छिपने के समय सोता है, उसके पास लक्ष्मी नहीं आती है ।

९—भो बालकाः ! सर्वदा सर्वत्र सर्वथा सत्यं वदत, असत्यं च कदापि न कथयत, यतोऽसत्य भाषणेन अध्यापकाः मातापितरौ भ्रातरः अन्ये च लोकाः न प्रसन्नाः भवन्ति, न च विश्वासं कुर्वन्ति । सत्यसम्भाषणेन भवत्याऽऽदरः संसारे, असत्यकथनेन निरादरः सर्वत्र ।

अरे लड़को ! सदा सब जगह सब प्रकार से सच बोलो और झूठ कभी न कहो, क्योंकि असत्य बोलने से पाठक माता पिता भाई और और लोग प्रसन्न मन नहीं होते हैं तथा नहीं विश्वास करते हैं। सत्य बोलने से संसार में आदर होता है, झूठ कहने से कहने सब जगह अपमान।

१०—भारतवर्षीयहिन्दूलोकानां (लोकैः) हिन्दीभाषाऽध्येतव्या (पठनीया) अवश्यम्, पाठनेन च विधेया (कर्तव्या) उन्नतिः अस्याः। हिन्दीभाषा उत्तमा भाषाऽस्ति।

हिन्दुस्तान के हिन्दू लोगों को हिन्दीभाषा अवश्य (ज़रूर) पढ़नी चाहिये, और पढ़ने पढ़ाने से इसकी उन्नति (बढ़ती, तरक्की) करनी चाहिये। हिन्दीभाषा उत्तम भाषा है।



तृतीयः पाठः Lesson III.

उपहासवृत्तानि Tit Bits.

द्वौ सुहृदौ (सखायौ) मिलित्वा नदीतटे गतौ कदाचित् । प्रथमः—यदि नद्याम् अग्निर्लग्नः स्यात् , तर्हि इमे दीनाः मत्स्याः कुत्र गमिष्यन्ति ? द्वितीयः-भ्रातः ! सर्वे हि धावित्वा वृक्षोपरि आरोक्ष्यन्ति ।

दो मित्र मिल कर कभी नदी के तट पर गये । पहिला—यदि नदी में आग लग जाए तो ये बेचारियाँ मछलियाँ कहां जाएँगी ? दूसरा—भाई सब ही भाग कर पेड़ों पर चढ़ जाएँगी ।

चूनीलालेन स्वबधिरमित्रात् विपण्यां पृष्टम् ,—मित्र ! प्रसन्नः भवान् अस्ति । बधिरः अवदत्,—वाढम् वृन्ताकाः गृहीताः, इति, चूनीलालः—सन्ति बालाः अपि आनन्दिताः । बधिरः—वाढम् , सम्भर्ज्य 'भरता' इति सम्पादयिष्यामि । अहो अहो किं कथनम् ।

चूनीलाल ने अपने बहिरे मित्र से बाज़ार में पूछा—'मित्र आप प्रसन्न हैं' । बहिरा (डोरा) बोला,—हां, बेंगन लिये हैं । चूनीलाल—बाल बच्चे राज़ी खुशी हैं । बहिरा—हा—भून कर भरता बनाएँगे, वाह जी वाह, क्या कहना ।

भारतवर्षीयपुरुषात् केनचित्पृष्टम् , 'भ्रातः ! अद्य केन सह रोटिका भक्षिताः' इति । भारतवर्षीयपुरुषेण कथितम् , त्रिभिः शाकैः, मूलिका शाकेन, आममूलकेन, मूलिकापत्रैः । अहो रसिकः !

हिन्दुस्तानी पुरुष से किसी ने पूछा—भैय्या ! आज किस से रोटी खाई, हिन्दुस्तानी ने कहा,—तीन सबज़िओं से, १ चढ़ी हुई मूली से, २ कच्ची मूली से, ३ मूली के पत्रों से । वाह, रे रसिक (शौकीन) ।

केनचित् मूर्खपुरुषेण स्वरोगिमित्रसमीपे गत्वा पृष्टम्,–'श्रीमन्मित्र! अधुना ज्वरः (तापः) तु न भवति' इति। रोगिणा उक्तम्,–तापस्तु त्रुटितः (दूरीभूतः), परं कट्यां पीडाऽस्ति। मूर्खः अवदत्,–ईश्वरस्य कृपया यथा ज्वरः त्रुटितः, तथा कटिरपि त्रुटिष्यति।

किसी मूर्ख मनुष्य ने अपने रोगी (बीमार) मित्र के पास जाकर पूछा,–मित्रजी! अब ताप (बुखार) तो नहीं होता, रोगी ने कहा, ताप तो टूट गया है, पर कमर में दर्द है। मूर्ख बोला,–ईश्वर-कृपा से जैसे ताप टूट गया है, वैसे कमर भी टूट जाएगी।

समाप्ते हि युद्धे सेनापतिः सैनिकान् अपृच्छत्, कथयत सङ्ग्रामे कानि कानि वीरतायाः कार्याणि कृतवन्तः इति, तेषु एकेन कथितम्, मया खड्गेन शत्रोः जङ्घा छेदिता इति, सेनापतिना उक्तम्, शिरः (शीर्षं) कुतः न छेदितम् इति। सैनिकः कथितवान्, शिरः तु तस्य पूर्वमेव छिन्नम् आसीत्, मया विचारितम्–धावित्वा पुनर्न आगच्छेत्, अतः तस्य जङ्घाऽपि कर्तिता, इति। अहो अहो ईदृशी वीरता, धन्यः धन्यः मातुः मणिरसि।

युद्ध समाप्त होते ही सेनापति ने सिपाहियों से पूछा, कहो, लड़ाई में क्या २ बहादुरी के काम किये हैं। उन में से एक ने कहा, मैंने तलवार से शत्रु की टांग काट दी। सेनापति ने कहा, सिर क्यों न काटा। सिपाही बोला, सिर तो उस का पहिले ही कटा पड़ा था, मैंने विचारा कि दौड़कर फिर न आजाए, उसकी टांग भी काट दी। आहा, वाहवाह, ऐसी बहादुरी। धन्य २ माई के लाल।

चतुर्थः पाठः Lesson IV.

लोकोक्तयः (कहावतें) Proverbs.

१ अन्धेषु काणो राजा । अन्धों में काणा राजा ।

२ अल्पविद्यो महागर्वी । थोड़ा पढ़ा हुआ बड़ा अहङ्कारी ।

३ अर्थं विना नैव यशश्च मानम् ।
विना धन के न कीर्ति और न मान (इज्जत) ।

४ अर्थेन सर्वे वशाः । धन से सब वश हो जाते हैं ।

५ अनभ्यासे विषं विद्या (शास्त्रम्) ।
अभ्यास के न होने से विद्या (शास्त्र) विष (ज़हर) है ।

६ अहिंसा परमो धर्मः ।
मन-वचन और शरीर से दुःख न देना उत्तम धर्म है ।

७ आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः ?
मणि-हीरा-लाल की खान में काँच मणि (शीशा) का जन्म कहां ?

८ आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।
भोजन और व्यापार (लेन देन) में लज्जा से रहित सुखी होता है ।

९ आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः ।
अपने मुँह के दोष से तोते मैना बांधे जाते हैं ।

१० ईश्वरेच्छा गरीयसी । ईश्वर की इच्छा बलवती है ।

११ उदिते परमानन्दे नाऽहं न त्वं न वै जगत् ।
परम आनन्दस्वरूप ब्रह्म के अनुभव होनेपर न मैं, न तू, न जगत् ।

१२ उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
सब काम उद्यम से ही सिद्ध होते हैं, इच्छाओं से नहीं ।

१३ उष्ट्राणां च विवाहोऽस्ति गर्दभा गीतगायकाः ।
ऊटों की शादी, गधे गीत गाने वाले । ऊटों के विवाह में गधे गाना गाने वाले ।

१४ ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।
ब्रह्मज्ञान के विना मुक्ति नहीं, जन्ममरण का बन्धन नहीं छूटता।

१५ एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत् ।
एक लज्जा (शर्म) के त्याग से सब जगह विजयी (जीतने-वाला) होता है ।

१६ एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारासहस्रकम् ।
एक चांद अन्धेरे को दूर कर देता है, हजारों तारे नहीं ।

१७ कालस्य कुटिला गतिः । काल की चाल टेढ़ी है ।

१८ कालो गच्छति मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।
मूर्ख पुरुषों समय नींद वा लड़ाई झगड़े से बीतता है ।

१९ का हानिः खलु सिंहानां बुक्कन्ते यदि कुक्कुराः ?
यदि (अगर) कुत्ते भौंकते हैं, तो शेरों की क्या हानि है ?

२० काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया !
हा शोक, काँच की कीमत से मैंने चिन्तामणि (जो मांगो उसे तुरन्त देनेवाला रत्न) बेच दी !

२१ किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ।
कल्पलता (मन इच्छित देनेवाली बेल) की भांति विद्या क्या २ सिद्ध नहीं करती है ।

२२ गच्छ सूकर ! भद्रं ते ब्रूहि, सिंहो मया जितः ।
जा सूअर ! तुझे कल्याण कहो, मैंने शेर को जीत लिया ।

२३ चौरे गते वा किमु सावधानम् ?
चोर के चले जाने पर क्या सचेत (होशियार) होना ?

२४ तृषितो जाह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ।
गङ्गा के तट (किनारे) पर प्यासा मूर्ख पुरुष कुंआँ खोदता है ।

२५ दुर्दरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभते ।
मेंडक जहां वक्ता (कहनेवाले) हों, वहां चुप रहना ही अच्छा है (शोभता है) ।

२६ दुग्धधौतोऽपि किं याति न वायसः कलहंसताम् ।
दूध से धोया हुआ भी कौआ क्या राजहंस बन जाता है ? नहीं ।

२७ नहि सर्वः सर्वं जानाति । सब लोग सब बात नहीं जानते ।

२८ नराणां नापितो धूर्तः ।
मनुष्यों में से नाई छली (ठग चालबाज़) होता है ।

२९ पुत्रः शत्रुरपण्डितः । मूर्ख बेटा शत्रु है ।

३० प्रत्यक्षे किं प्रमाणम् ? । प्रत्यक्ष में क्या प्रमाण ? ।

३१ बाबावाक्यं प्रमाणम् । बाबा (दादा) की बात प्रमाण है ।

३२ भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।
दूध घी से फिर भी सींचा हुआ नींब का पेड़ मीठा नहीं होता है ।

३३ **भोजनान्ते विषं वारि ।**
भोजन के अन्त में (पीछे) पानी पीना विष (ज़हर) है ।

३४ **मुण्डं मुण्डयित्वा नक्षत्राणि पृच्छति ।**
मूँड (सिर) मूँडा कर नक्षत्र (मुहूर्त) पूछता है ।

३५ **यथा राजा तथा प्रजा ।** जैसा राजा, वैसी प्रजा (रैयत) ।

३६ **वृद्धिमिष्टवतो मूलमपि विनष्टम् ।**
सूद (व्याज) के चाहनेवाले का मूलधन (ऋण में दिया हुआ असली धन) भी नष्ट हो गया ।

३७ **विद्याविहीनः पशुः ।** विद्या गुण से रहित पुरुष पशु के समान है ।

३८ **सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ।**
सब सच में बढ़ता है, फलता है, आदर सत्कार पाता है ,

३९ **स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ताः केशाः नराः नखाः ।**
स्थान से भ्रष्ट अपने २ ठौर (जगह) से गिरे हुए दान्त, केश (बाल), मनुष्य, नख (नाखून—नहँ) नहीं शोभते ।

४० **हितोपदेशो मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।**
मूर्खों को अच्छी शिक्षा भला उपदेश दिया हुआ अतिक्रोध के लिये होता है शान्ति के वास्ते नहीं ।

पञ्चमः पाठः Lessan V.

सम्भाषणे (वार्तालापे) उपयोगिश्लोकाः
Useful Verses in Speech

वरमेको गुणीपुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारासहस्रकम् ॥ १ ॥

एक गुणवान् विद्वान् पुत्र अच्छा है, सैकड़ों मूर्ख बेटे अच्छे नहीं । एक ही चांद अन्धेरे को दूर कर देता है, हजारों तारे नहीं ॥

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥

विद्वान् होना (पण्डिताई) और राजा होना (बादशाही) ये समान (बराबर) नहीं हैं । राजा अपने देश में मान पाता है, और विद्यावान् पण्डित सब ठौर (जगह) पूजा जाता है ॥ २ ॥

नक्षत्रभूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः ।
पृथिवीभूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ३ ॥

तारों का भूषण (सजाने वाला) चांद है, स्त्रियों का भूषण पति (भर्ता) है, पृथिवी का भूषण राजा है, विद्या सबका भूषण है ॥

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एवं नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥ ४ ॥

चोर नहीं चुरा सकते, राजा हर (छीन) नहीं सकता, भाई बांट नहीं सकते, भार (बोझ) करने वाला नहीं, सदा खर्च करने पर बढ़ता ही है, विद्यारूपी धन सब धनों में प्रधान (मुख्य, बड़ा) है ॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥

वह माता (मां) दुश्मन है, वह पिता वैरी है, जिसने पुत्र को नहीं पढ़ाया है । वह बालक सभा के बीच में शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगला ॥ ५ ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नैव साधनम् ॥ ६ ॥

गुरुजी की सेवा से, बहुत धन से, वा विद्या से, विद्या प्राप्त हुआ करती है, चौथा और कोई साधन (उपाय) कारण नहीं है ॥६॥

सुखार्थी चेत्त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी चेत्त्यजेत्सुखम् ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥ ७ ॥

सुखों के चाहनेवाला विद्या न पढ़े, विद्या पढ़ने की इच्छावाला सुखों की ओर ध्यान न धरे । सुख भोगने की इच्छावाले को विद्या-प्राप्ति कहाँ ? विद्यार्थी को सुख कहाँ ॥ ७ ॥

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ ८ ॥

उद्यम से ही सब काम सिद्ध होते हैं, इच्छाओं से नहीं, सोए हुए शेर के मुँह में अपने आप हरिण हिरन नहीं आ पड़ते हैं ॥८॥

पश्य कर्मवशात्प्राप्तं भोज्यकालेऽपि भोजनम् ।
हस्तोद्यमं विना वक्त्रे प्रविशेन्न कथञ्चन ॥ ९ ॥

प्रारब्ध (भाग्य से) खाना खाने के समय मिला हुआ भोजन भी हाथ के उद्यम के विना मुँह में किसी प्रकार नहीं जा पड़ता है ॥९॥

न दैवमिति सञ्चिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः ।
अनुद्योगेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमर्हति ॥ १० ॥

दैव (भाग्य–प्रारब्ध–होनहार–किस्मत) ऐसा सोच कर अपना उद्यम न छोड़े । विना उद्यम के कौन तिलों से तैल पा सकता है ॥१०॥

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठं लोष्ठसमं क्षितौ ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ ११ ॥

लकड़ी मिट्टी (माटी) के ढेले की भांति मरे हुए शरीर को

धरती जमीन पर छोड़ कर सम्बन्धी लोग मुँह मोड़ घरों को चले जाते हैं, धर्म उस के साथ जाता है ॥ ११ ॥

विद्या रूपं धनं शौर्यं कुलीमत्वमरोगता ।
राज्यं स्वर्गश्च मोक्षश्च सर्वं धर्मादवाप्यते ॥ १२ ॥

विद्या, सुन्दरता (खूबसूरती) धन (सम्पत्ति) वीरता (बहादुरी) उत्तम कुल में जन्म, नीरोगता (रोग रहित सुखी होना) राज्य, स्वर्ग और मुक्ति (जन्ममरण के बन्धन से छूट जाना) सब कुछ धर्म से मिलता है ॥ १२ ॥

इति श्री झङ्गनिवासिगौरीशङ्करशास्त्रिविद्याभूषणकृतायां
संस्कृतस्वयंशिक्षकप्रभायां तृतीयो भागः समाप्तः ।

समाप्ता चेयं संस्कृतस्वयंशिक्षकप्रभा ।

जेतलीजातिजातेन झङ्गपत्तनवासिना ।
विद्याभूषणोपाधिभूषितेन शुभार्थिना ॥ १ ॥
नानाप्रभाप्रणेत्रा च गौरीशङ्करशास्त्रिणा ।
सहस्रद्वयसङ्ख्याके एकादशाधिके तथा ॥ २ ॥
हेमन्तर्तुविशिष्टे वै वैक्रमे वत्सरे वरे ।
पौषशुक्लतृतीयायां भूमितनयवासरे ॥ ३ ॥
संस्कृतस्वयंशिक्षकप्रभाऽऽशुबोधकारिणी ।
सरला सरसाऽकारि लोकानां सुखहेतवे ॥ ४ ॥
भवे भवेत् प्रचारोऽस्याः श्रीभवस्यानुकम्पया ।
मामकीनं हि चास्तीदं सविनयं निवेदनम् ॥ ५ ॥

॥ इति शम् ॥

❀ समर्पणम् ❀

लुध्यानागुड़मण्ड्यां वै चिरकालनिवासिनः ।
प्रतिष्ठाधर्मनिष्ठाभ्यां भूषितस्य यशस्विनः ॥ १ ॥

श्रीपण्डितहृषीकेशशर्मणः शुभकर्मणः ।
सादर मर्प्यते हीदं पुस्तकं पाणिपद्मयोः ॥ २ ॥

❀ धन्यवादः ❀

मानधारी उपकारी, सदाचारी गुणधार ।
लक्ष्मी-विष्णु-दुर्गा, शिवमूर्ति-प्रतिष्ठाकार ॥ १ ॥

श्रीमतसनातनधर्म, स्कूलसंसत्प्रधान ।
सण्डहौज़री फैक्टरी, मालिक कृपानिधान ॥ २ ॥

पण्डितनवरत्नचन्द्रजी, धर्मवान् श्रीमान् ।
धन्यवाद है आपका, भले पुरुष धनवान् ॥ ३ ॥

भोजन-वसंन-धन-दान से, प्रेम भाव से आप ।
साधु-ब्राह्मण-दीनों का दूर करें सन्ताप ॥ ४ ॥

झङ्गनिवासी गौरीशङ्करशास्त्री विद्याभूषण, हौस नं० ४४८ बी ३,
लुधियाना ।



१. वस्त्र, कपड़े ।